Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 14

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

8 शअबान 1441 हिजरी कमरी 2 शहादत 1399 हिजरी शमसी 2 अप्रैल 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मुजरिम वह है जो अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा तआला से अपना सम्बन्ध काट ले।
अत: अगर ख़ुदा तआला से व्यावहारिक तौर पर बेज़ारी ज़ाहिर करता है तो समझ ले कि ख़ुदा तआला भी इस से बेज़ार है और अगर ख़ुदा तआला से मुहब्बत करता है और पानी की तरह उस की तरफ़ झुकता है तो समझ ले कि वह मेहरबान है। ख़ुदा तआला अपनी तरफ़ आने वाले की चेष्टा और कोशिश को नष्ट नहीं करता यह संभव है कि ज़मीन दार अपना खेत नष्ट कर ले। नौकर निलम्बित हो कर नुक़्सान पहुँचाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मुजरिम वह है जो अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा तआला से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर ले

मुजरिम वह है जो अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा तआला से अपना सम्बन्ध काट ले। इस को तो हुक्म था कि वह ख़ुदा तआला के लिए हो जाता और सच्चों के साथ हो जाता मगर वह हवस का बंदा बन कर रहा और बुरों और ख़ुदा और रसूल के दुश्मनों से मुवाफ़िक़त करता रहा। मानो उसने अपने व्यवहार से दिखा दिया कि ख़ुदा तआला से विच्छेद कर लिया है। यह एक अल्लाह की आदत है कि इन्सान जिधर क़दम उठाता है इस के विपरीत तरफ से वह दूर होता जाता है। वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से अलग हो कर अगर नफ़सानी इच्छाओं का बंदा होता है तो ख़ुदा इस से दूर होता जाता है और जैसे-जैसे इधर सम्बन्ध बढ़ते हैं उधर कम होते हैं। यह प्रसिद्ध बात है कि दिल रा बदल रहे अस्त। अत: अगर ख़ुदा तआला से व्यावहारिक तौर पर बेज़ारी ज़ाहिर करता है तो समझ ले कि ख़ुदा तआला भी इस से बेज़ार है और अगर ख़ुदा तआला से मुहब्बत करता है और पानी की तरह उस की तरफ़ झुकता है तो समझ ले कि वह मेहरबान है। मुहब्बत करने वाले से अधिक अल्लाह तआला उस को मुहब्बत करता है। वह वह ख़ुदा है कि अपने प्यारों पर बरकतें नाज़िल करता है और उनको महसूस करा देता है कि ख़ुदा उनके साथ है। यहां तक कि उनके कलाम में ,उनके होंठों में बरकत रख देता है और लोग उस के कपड़ों और इस की हर बात से बरकत पाते हैं। उम्मते मुहम्मदिया में इस का स्पष्ट सबूत इस वक़्त तक मौजूद है कि जो ख़ुदा के लिए होता है ख़ुदा उस का हो जाता है।

ख़ुदा की तरफ़ कोशिश करने वाला कभी भी असफल नहीं रहता

ख़ुदा तआला अपनी तरफ़ आने वाले की चेष्टा और कोशिश को नष्ट नहीं करता यह संभव है कि ज़मीन दार अपना खेत नष्ट कर ले। नौकर निलम्बित हो कर नुक़्सान पहुँचाए। परीक्षा देने वाला सफल न हो मगर ख़ुदा की तरफ़ कोशिश करने वाला कभी भी असफल नहीं रहता। इस का सच्चा वादा है कि اَلَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अल्अनकबूत: 70) ख़ुदा तआला की राहों की तलाश में जो चेष्टा करता है , वह आख़िर मंज़िल मक़्सूद पर पहुंचा। सांसारिक इम्तहानों के लिए तैयारियां करने वाले, रातों को दिन बना देने वाले छात्रों की मेहनत और हालत को हम देखकर रहम खा सकते हैं तो क्या अल्लाह तआला जिसका रहम और फ़ज़ल बेहद और बेअन्त है अपनी तरफ़ आने वाले को नष्ट कर देगा? हरगिज़ नहीं। हरगिज़ नहीं। अल्लाह तआला किसी की मेहनत को नष्ट नहीं करता। اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (अत्तौब: 120) مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ (अज़्ज़लज़ाल: 8) हम देखते हैं कि हर साल हज़ारों छात्र सालों साल की मेहनतों और कोशिशों पर पानी फिरता हुआ देखकर रोते रह जाते हैं और आत्महत्या कर लेते हैं। मगर अल्लाह तआला का असीम फ़ज़ल ऐसा है कि वह थोड़ा से कर्म को भी नष्ट नहीं करता। फिर किस क़दर अफ़सोस का स्थान है कि इन्सान दुनिया में काल्पनिक और वहमी बातों की तरफ़ तो इस क़दर शौक रख कर चाहने वाला हो कर मेहनत करता है कि आराम अपने ऊपर मानो हराम कर लेता है और सिर्फ ख़ुशक उम्मीद पर कि शायद कामयाब हो जाएं, हज़ारों कष्ट और दु:ख उठाता है। व्यापारी लाभ की उम्मीद पर लाखों रुपए लगा देता है मगर यक़ीन उसे भी नहीं होता कि ज़रूर लाभ ही होगा। मगर ख़ुदा तआला की तरफ़ जाने वाले की (जिसके वादा यक़ीनी और मज़बूत हैं कि जिसकी तरफ़ क़दम उठाने वाले की ज़रा भी मेहनत नष्ट नहीं जाती) में इस क़दर दौड़ धूप और सरगर्मी नहीं पाता हूँ। ये लोग क्यों नहीं समझते? वे क्यों नहीं डरते कि आख़िर एक दिन मरना है। क्या वे इन असफलताओं को देखकर भी इस व्यापार की फ़िक्र में नहीं लग सकते। जहां हानि का नाम तथा निशान ही नहीं और लाभ यक़ीनी है। ज़मीन्दार कितनी मेहनत से काशतकारी करता है मगर कौन कह सकता है कि नतीजा ज़रूर राहत ही होगा।

अल्लाह तआला कैसा रहीम है और यह कैसा ख़ज़ाना है कि कोड़ी भी जमा हो सकती है। रुपया और अशर्फ़ी भी। न चोर चकार का अंदेशा न ये ख़तरा है कि दीवाला निकल जाएगा। हदीस में आया है कि अगर कोई एक कांटा रास्ता से हटाए तो इस का भी सवाब उस को दिया जाता है। और पानी निकालता हुआ अगर एक डोल अपने भाई के घड़े में डाल दे तो ख़ुदा तआला उस का भी बदला नष्ट नहीं करता। अत: याद रखो कि वह मार्ग जहां इन्सान कभी असफल नहीं हो सकता वह ख़ुदा का मार्ग है। दुनिया की शाहराह ऐसी है जहां क़दम क़दम पर ठोकरें और नाकामियों की चट्टानें हैं। वे लोग जिन्होंने सल्तनतों तक को छोड़ दिया आख़िर बेवक़ूफ़ तो न थे। जैसे इब्राहीम अदहम, शाह शुजाअ, शाह अब्दुल अज़ीज़ जो मुजद्दिद भी कहलाते हैं। हुकूमत , सल्तनत और दुनिया के वैभव को छोड़ बैठे। इस की यही वजह तो थी कि हर क़दम पर एक ठोकर मौजूद है। ख़ुदा एक मोती है इस की मार्फ़त के बाद इन्सान दुनियावी चीजों को ऐसी हीनता और ज़िल्लत से देखता है कि उनके देखने के लिए भी उसे तबीयत पर एक जबर और कष्ट करना पड़ता है। अत: ख़ुदा तआला की मार्फ़त चाहो और इस की तरफ़ ही क़दम उठाओ कि कामयाबी इसी में है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 125 से 127 प्रकाशन कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-7)

क्या ही उत्तम तक़रीर थी, हुज़ूर अनवर ने to the point बात की, ऐसी तक़रीर बहुत कम सुनने में मिलती है।

जलसा में शामिल होने के बाद यह विश्वास हो गया है कि औरत को जो स्थान इस्लाम देता है वह अन्य धर्मों और पश्चिमी समाज से बहुत बुलंद है।

हुज़ूर अनवर निहायत ज़हीन और व्यापक नज़र वाले इन्सान हैं , आप दूर अंदेश हैं,आपका ख़िताब इस के अनुसार था।

विश्वव्यापी बैअत एक चमत्कार है,जमाअत में आपसी मुहब्बत बहुत अधिक है, आप लोगों के चेहरों पर हमेशा रहती है।

मुसलमानों को चाहिए कि अहमदियों का जो दृष्टिकोण है इस को अपनाएं ,हमने ख़लीफ़तुल मसीह की समस्त तक़ारीर सुनी हैं हम ने महसूस किया है कि जो ख़लीफ़ा ने वर्णन किया है वह सारी दुनिया को बताने की ज़रूरत है।

हुज़ूर से मुलाक़ात के बाद आपकी सादगी और मिलनसारी से बेहद प्रभावित हुई हूँ और वास्तव में आपकी शख़्सियत का सम्मान जो मेरा ख़्याल था इस से अधिक है।

आप लोगों की मेहमान-नवाज़ी लाजवाब थी, आप लोगों के अल्लाह तआला पर मज़बूत ईमान और अल्लाह तआला की राह में जो काम आप सरअंजाम रहे हैं। इस को देखकर में बहुत ही ख़ुश हुआ हूँ, इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब अक़्ल तथा फ़िरासत से भरे हुए थे।

मैं विभिन्न आयोजनों और प्रोग्रामों में शामिल हुआ हूँ, जो मुहब्बत और इन्सानियत का सम्मान, बराबरी और भाई चारा यहां जलसा के अवसर पर देखी है ऐसा कभी भी कहीं भी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखी।

मैंने आज तक कभी ऐसा मुनज़्ज़म और उच्च स्तर का इज्तिमा नहीं देखा जिसमें हज़ारों लोग सम्मलित हों और हर तरफ़ मुहब्बत और भाई चारे का प्रकटन हो।

अहमदियत एक बहुत ही प्रभावित करने वाली इन्क़िलाबी तहरीक है,अहमदियत आज इस्लाम की रक्षा में सूचि में सब से पहले दिखाई देती है।

जलसा सालाना जर्मनी पर आने वाले अहमदी , ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम सम्मानीनय मेहमानों के बहुत ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

जलसा सालाना जर्मनी के अवसर पर मीडिया कवरेज

जलसा सालाना जर्मनी की इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया और सोशल मीडिया में बड़े व्यापक स्तर पर कवरेज हुई।

जर्मनी में कुल13 मीडिया outlets पर जलसा की कवरेज हुई

इस में जर्मनी के सबसे अधिक पढ़े जानेवाले अख़बार FAZ से लेकर कुछ लोकल अख़बारों, ऑनलाइन अख़बारों और मैगज़ीन भी शामिल हैं।

इस के इलावा प्रान्तीय टीवी SWR पर भी ख़बर प्रसारित हुई और इस की वेबसाइट पर आर्टीकल के साथ ख़बर लगाई गई।

जर्मनी के इलावा इटली, चीन और सलवाकिया के ऑनलाइन अख़बारों में भी जलसा के बारे में से ख़बरें प्रकाशित हुईं। एक अनुमान के अनुसार इन समस्त media outlets की पहुंच 2 करोड़ 26 लाख से अधिक लोगों तक है।

एम टी ए (अफ़्रीक़ा) के द्वारा भी अफ़्रीक़ा के देशों में कवरेज हुई है।

एम टी ए अफ़्रीक़ा टीम ने अफ़्रीक़ा भर में नैशनल टीवी चैनल्ज़ को दैनिक की बुनियाद पर जलसा सालाना जर्मनी के बारे में से रिपोर्टें बना कर उपलब्ध कीं जोकि निम्नलिखित नैशनल टीवी चैनल्ज़ पर ये रिपोर्टें प्रसारित हुईं।

(1)घाना नैशनल टेलीविज़न(2) सेरालियून नैशनल टेलीविज़न(3) गेम्बया नैशनल टेलीविज़न(4) योगंडा नैशनल टेलीविज़न(5) रवांडा नैशनल टेलीविज़न

जलसा के बारे में से रिपोर्टें विशेष न्यूज़ बल्टन में प्रसारित हुईं। इन टीवी चैनलों को देखने वालों की संख्या 30 मिलियन से अधिक है। सेरालियून के नैशनल टैलीविज़न और अन्य दो नैशनल टीवी चैनल्ज़ पर जलसा सालाना जर्मनी की कार्रवाई दैनिक चौबीस घंटे प्रसारित की जाती रही।

इस साल पहली बार जलसा सालाना जर्मनी के प्रसारण अफ़्रीकन भाषाओं में अनुवाद के साथ प्रसारित हुईं। पहली बार जलसा के तीनों दिन एम टी ए स्टूडियो के समस्त प्रोग्राम जिस मेंstudio discussion भी शामिल हैं Twi यूरोबा और सिवा हेली भाषाओं में अनुवाद के साथ प्रसारित हुए।

रिसाला रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ के द्वारा भी सोशल मीडिया पर व्यापक स्तर पर कवरेज हुई है।

इस साल अंग्रेज़ी, स्पेनिश और जर्मन ऐडीशन की वैबसाईटस पर जलसा सालाना की कवरेज की गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के दौरा के दौरान विभिन्न व्यस्तताएं जिसमें वफ़दों के साथ मुलाक़ातें, व्यक्तिगत मुलाक़ातें और आमीन इत्यादि के प्रोग्राम के बारे में से संक्षिप्त13 वीडीयो बनाई गईं।

इसके इलावा 21 नए आर्टीकल डाले गए।

सोशल मीडिया पर भी115से अधिक पोस्टें डाली गईं

इन वीडियो, आर्टीकलों और सोशल मीडिया की posts के द्वारा 7 लाख 30 हज़ार के क़रीब लोगों तक पैग़ाम पहुंचा जिसमें कोशिश की गई थी कि पैग़ाम ग़ैर मुस्लिम और पश्चिमी देशों के लोगों को जाए। इस संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है और अंदाज़े के अनुसार अगली यह संख्या एक मिलियन तक हो जाएगी। इंशा अल्लाह

08 जुलाई 2019 ई(दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा चार बजे तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़ुतों और रिपोर्टों को देखा और हिदायतों से नवाज़ा। और हुज़ूर अनवर की विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

आज प्रोग्राम के अनुसार विभिन्न देशों से आने वाले वफ़दों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ातें थीं।हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मुसअब बिन उमैर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ..वही नौजवान बुज़ुर्ग हैं

जो हिजरत से पहले यसरिब में पहले इस्लामी मुबल्लिग़ बना कर भेजे गए और जिनके द्वारा मदीना में इस्लाम फैला।

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि मदीना में पहले आदमी थे जिन्हों ने हिजरत से पहले जुम्अः पढ़ाया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को याद करते तो फ़रमाया करते थे कि मैंने मुसअब से ज़्यादा हसीन तथा सुन्दर और नाज़ तथा नेअमत और सुविधाओं मैं पला कोई नहीं देखा।

सुन्दर और हसीन और अपने ख़ानदान में प्रिय एवं महबूब समझे जाने वाले इख़लास एवं वफ़ा के पैकर बदरी सहाबी हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन।

ओस कबीला के रईसों सअद बिन मआज़ और उसैद बिन अलहुज़ैर रज़ी अल्लाह अन्हुमा की ईमान वर्धक घटना का वर्णन

ख़िलाफ़त निज़ाम और जमाअत के निज़ाम की अत्यधिक पाबंदी और इताअत करने वाले दो बुज़ुर्गान ,वक़्फ़ का हक़ अदा करने वाले नायब नाज़िर ज़याफ़त आदरणीय मलिक मुनव्वर अहमद साहिब और मेहनत और इख़लास एवं वफ़ा के साथ धर्म की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ पाने वाले प्रोफ़ैसर मुनव्वर शमीम ख़ालिद साहिब की वफ़ात। मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 फरवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का वर्णन होगा उनका नाम है हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि का सम्बन्ध क़ुरैश के क़बीला बनू अब्दुल दार से था। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि की कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह थी। इस के अतिरिक्त उनकी कुनिय्यत अबू मुहम्मद भी वर्णन की जाती है। हज़रत मुसअब रज़ि के पिता का नाम उमैर रज़ि बिन हाशिम और उनकी माता का नाम ख़न्नास या हन्नास स पुत्री मालिक था जो मक्का की एक मालदार औरत थीं। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के माता पिता उनसे बहुत मुहब्बत करते थे। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि की माता ने उनकी परवरिश बड़े शान शौकत से की। वह उन्हें बेहतरीन पोशाक और क़ीमती लिबास पहनाती थीं और हज़रत मुसअब रज़ि मक्का की उच्च स्तर की ख़ुशबू प्रयोग करते और हज़रमी जूता जो हिज्र मूत के इलाक़े का बना हुआ जूता था, उमैर रज़ि लोगों के लिए विशेष था , वहां से मंगवा के पहना करते थे। हिज्र मूत अदन से पूर्व की तरफ़ समुंद्र के निकट एक व्यापक इलाक़ा है। बहरहाल उत्तम लिबास, उत्तम ख़ुशबू और जूता तक वह बाहर से मंगवाया करते थे। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि की बीवी का नाम हम्ना पुत्री जह्श था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नी उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्त जह्श की बहन थीं। हम्ना बिन्त जह्श से एक बेटी ज़ैनब पैदा हुईं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को याद करते तो फ़रमाया करते थे कि मैं ने मुसअब से ज़्यादा हसीन तथा सुन्दर और नाज़ तथा नेअमत और सुविधाओं मैं पला बढ़ा कोई आदमी नहीं देखा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 85- 86 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 175 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि" दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(सैरुस्सहाबः लेखक शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी भाग 2 मुहाजिरीन हिस्सा अव्वल पृष्ठ 270-275 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची 2004 ई)

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 71 ''हम्ना पुत्री जह्श' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(मुअजमुल बुलादन भाग 2 पृष्ठ 157 प्रकाशन दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत)

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि महान सहाबा में से थे और आरम्भ में ही इस्लाम स्वीकार करने वाले पहले लोगों में शामिल थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब दारे अर्क़म में तब्लीग़ किया करते थे उस वक़्त आप ने इस्लाम स्वीकार किया लेकिन अपनी माता और क़ौम के विरोध के भय से उसे छुपा रखा। हज़रत मुसअब रज़ि छुप कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होते रहे। एक बार उस्मान बिन तलहा रज़ि ने उन्हें नमाज़ पढ़ते देख लिया और उनके घर वालों और माता को ख़बर कर दी। माता पिता ने उनको क़ैद कर दिया। आप क़ैद में ही रहे यहां तक कि हिजरत कर के हब्शा चले गए। उनको मौक़ा मिला , बाहर आए और फिर हिजरत कर गए। कुछ समय के बाद कुछ मुहाजरीन हब्शा से मक्का वापस आए तो हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि भी उनमें शामिल थे। आप की माता ने जब आप की बुरी हालत देखी तो आइन्दा से विरोध तर्क कर दी और बेटे को इस के हाल पर छोड़ दिया। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को दो हिजरतें करने का सौभाग्य नसीब हुआ। आपने पहले हब्शा और बाद में मदीना की तरफ़ की।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 86 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि",दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 175 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि" दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को मैंने आराम के ज़माना में भी देखा और मुसलमान होने के बाद भी। इस्लाम के लिए उन्होंने इतने दुःख झेले कि मैंने देखा कि उनके जिस्म से शीघ्र इस तरह उतरने लगी थी जैसे साँप की केंचुली उतरती है और नई खाल है।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने इसहाक़ पृष्ठ 230 मन अज़्ब फिल्लाह मिनल मोमेनीन, दारुलकुतब अल्इलमिया बेरूत 2004 ई)

ये क़ुर्बानी के ऐसे-ऐसे स्तर थे जो हैरत करने वाले हैं।

एक दिन मुसअब बिन उमैर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाए जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

अपने सहाबा के पास बैठे हुए थे। इस वक़्त हज़रत मुसअब रज़ि के टुकड़े लगे कपड़ों में चमड़े की टॉकियाँ लगी हुई थीं। कहाँ तो वह उच्च स्तर का लिबास और कहाँ मुसलमान होने के बाद यह हालत कि चमड़े के जोड़ लगे हुए थे। सहाबह रज़ि ने हज़रत मुसअब रज़ि को देखा तो सिर झुका लिए कि वह भी हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि की तबदीली हालत में कोई मदद नहीं कर सकते थे। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि ने आकर सलाम किया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस का जवाब दिया और इस की उत्तम रूप में प्रशंसा वर्णन फ़रमाई। फिर फ़रमाया कि अलहमदो लिल्लाह दुनियादारों को उनकी दुनिया नसीब हो। मैंने मुसअब रज़ि को इस ज़माना में देखा है जब शहर मक्का में इस से बढ़कर माल तथा दौलत वाला तथा नेअमत वाला कोई न था। यह माता पिता की प्रिय औलाद थी मगर ख़ुदा और इस के रसूल की मुहब्बत ने उसे आज इस हाल तक पहुंचाया है और उसने वह सब कुछ ख़ुदा और इस की प्रसन्नता के लिए छोड़ दिया है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 86 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत अली रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को देखा तो उनकी वैभव वाली अवस्था को याद कर के रोने लगे जिसमें वह रहा करते थे। जो उनकी पहली हालत थी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को याद आई कि किस तरह अब क़ुर्बानी कर रहे हो।

हज़रत अली रज़ि से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे कि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि आए। उनके शरीर पर चमड़े की पैवंद लगी हुई एक चादर थी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखा तो उनकी उस वैभव वाली अवस्था को याद कर के रोने लगे जिस में वह पहले थे और जिस हालत में वह अब थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या हाल होगा तुम्हारा उस वक़्त जबकि तुम में से एक शख़्स एक जोड़े में सुब्ह करेगा तो दूसरे जोड़े में शाम करेगा अर्थात इतनी सुविधा पैदा हो जाएगी कि सुबह शाम तुम कपड़े बदला करोगे और फिर आप ने फ़रमाया कि इस के सामने एक बर्तन खाने का रखा जाएगा तो दूसरा उठाया जाएगा अर्थात खाना भी किस्म किस्म का होगा और विभिन्न कोर्सज़ (courses)सामने आते जाऐंगे जिस तरह आज रिवाज है। और तुम अपने मकानों में ऐसे ही पर्दे डालोगे जैसा कि काबा पर पर्दा डाला जाता है। बड़े क़ीमती किस्म के पर्दे इस्तिमाल किए जाऐंगे। यह बिलकुल आजकल के नज़्ज़ारे या इस सुविधा के नज़्ज़ारे हैं जब मुसलमानों को बाद में वे सुविधाएं मिली। सहाबा रज़ि ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! क्या हम उस वक़्त आज से बहुत अच्छे होंगे और इबादत के लिए फ़ारिग़ होंगे ऐसी फ़राख़ी होगी, ऐसे हालात होंगे तो फिर इबादत के लिए बिलकुल फ़ारिग़ होंगे और मेहनत और परेशानी से बच जाऐंगे? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं बल्कि तुम आज के दिन इन दिनों से बेहतर हो। (सुनन अत्तिरमज़ी अबवाबुस्फ अलकियाम हदीस 2476)तुम्हारी हालत, तुम्हारी इबादतें, तुम्हारे स्तर इस से बहुत बुलंद हैं जो बाद में आने वालों की सुविधाओं की अवस्था में होंगे।

सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने हिजरत हब्शा के बारे में लिखा है इस में से कुछ में पहले दूसरे सहाबा रज़ि के ज़िक्र में वर्णन कर चुका हूँ। संक्षिप्त यहां ज़िक्र कर देता हूँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमाने पर रजब महीने की पाँच नब्वी में ग्यारह मर्द और चार औरतों ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की। उनमें हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि रज़ी अल्लाह तआला अन्हो भी थे। आप लिखते हैं कि यह एक अजीब बात है कि इन आरम्भिक मुहाजिरीन में अधिक संख्या उन लोगों की थी जो क़ुरैश के ताक़तवर क़बीलों से सम्बन्ध रखते थे और कमज़ोर लोग कम-नज़र आते हैं जिस से दो बातों का पता चलता है। प्रथम यह कि ताक़तवर क़बीलों से सम्बन्ध रखने वाले लोग भी क़ुरैश के अत्याचारों से सुरक्षित न थे। दूसरे यह कि कमज़ोर लोग जैसे ग़ुलाम इत्यादि उस वक़्त ऐसी कमज़ोरी और बेबसी की हालत में थे कि हिजरत की भी ताक़त न रखते थे। बहरहाल क़ुरैश मक्का को उन लोगों की हिजरत का जब इल्म हुआ तो वह सख़्त नाराज़ हुए कि यह शिकार मुफ़्त में हमारे हाथ से निकल गया। अत: उन्होंने इन मुहाजिरीन का पीछा किया मगर जब उनके आदमी तट पर पहुंचे तो जहाज़ रवाना हो चुका था और ये लोग नाकाम वापस लौटे। हब्शा में पहुंच कर मुसलमानों को निहायत अमन की ज़िन्दगी प्राप्त हुई और ख़ुदा ख़ुदा कर के क़ुरैश के अत्याचारों से मुक्ति मिली।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि एम ए पृष्ठ 146-147)

बैअत उक़बा औला के अवसर पर मदीना से आए हुए 12 लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की। जब ये लोग वापस मदीना जाने लगे तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को उनके साथ भिजवाया ताकि वे उन्हें क़ुरआन पढ़ाऐं और इस्लाम की शिक्षा दें। मदीना में आप क़ारी और मुक़्री, उस्ताद के नाम से मशहूर हो गए।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 175-176 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि" दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 4 पृष्ठ 37 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि" दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2010 ई)

(अस्सीरतुन्नबविय्यी ले इब्ने हिशाम पृष्ठ 199 बाब इरसाल रसूल मुसअब बिन उमैर रज़ि मा वफ़द अलउकबा, दार इब्न हज़म बेरूत लबनान 2009 ई)

मुक़्री अर्थात उस्ताद उस के नाम से मशहूर हो गए। एक दूसरी रिवायत के अनुसार ओस और ख़ज़रज के अन्सार ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि कोई व्यक्ति हमें क़ुरआन पढ़ाने के लिए भेजें तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को भेजा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 1 पृष्ठ 171, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

मदीना में हज़रत मुसअब रज़ि ने हज़रत असअद बिन ज़ुरारह रज़ि के घर निवास किया। आप नमाज़ों में इमामत के फ़राइज़ भी अंजाम देते थे।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हिशाम पृष्ठ 199 बाब इरसाल रसूल मुसअब बिन उमैर रज़ि मा वफ़द अल-उकबा, दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

हज़रत मुसअब रज़ि एक समय तक हज़रत असद बिन ज़ुरारह रज़ि के घर ठहरे रहे हे लेकिन बाद में हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि के घर स्थान्तरित हो गए।

(सैरुस्सहाब: लेखक शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी भाग 2 मुहाजरीन हिस्सा अव्वल पृष्ठ 272 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची 2004 ई)

हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुहाजिर सहाबा में सबसे पहले हमारे पास मदीना तशरीफ़ लाने वाले मुसअब बिन उमैर रज़ि और इब्न उम्मे मक्तूम रज़ि थे। मदीना पहुंच कर इन दोनों सहाबह रज़ि ने हमें क़ुरआन मजीद पढ़ाना शुरू कर दिया। फिर अम्मार रज़ी अल्लाह तआला अन्हो , बिलाल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और सअद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो आए और हज़रत उम्र बिन ख़िताब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो भी सहाबा को साथ लेकर आए। इस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। कहते हैं कि मैंने कभी मदीना वालों को इतना ख़ुश होने वाला नहीं देखा था जितना वे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने पर ख़ुश हुए थे। बच्चियां और बच्चे भी कहने लगे थे कि आप अल्लाह के रसूल हैं। हमारे यहां तशरीफ़ लाए हैं

(सही अल-बुख़ारी किताबुल तफ़सीर अल-क़ुरआन बाब सूरत आला हदीस 4941)

सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के बारे में और अधिक वर्णन करते हैं कि

''दारे अर्क़म में जो व्यक्ति ईमान लाए वे भी साबक़ीन में गिने जाते हैं। उनमें से ज़्यादा मशहूर ये हैं। प्रथम मुसअब बिन उमैर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो जो बनू अब्दुल दार में से थे और बहुत सुन्दर और हसीन थे और अपने ख़ानदान में निहायत प्रिय तथा महबूब समझे जाते थे। यह वही नौजवान बुज़ुर्ग हैं जो हिजरत से पहले यसरिब में पहले इस्लामी मुबल्लिग़ बना कर भेजे गए और जिनके द्वारा मदीना में इस्लाम फैला।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 129)

फिर एक सीरत की किताब में लिखा है कि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि मदीना में पहले आदमी थे जिन्हों ने हिजरत से पहले जुम्अ: पढ़ाया। हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने बैअत उक़बा सानिया से पहले रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में मदीना में नमाज़ जुम्अ: के लिए इजाज़त मांगी । हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इजाज़त दी। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि ने मदीना में हज़रत सअद बिन ख़ीसमह रज़ि के घर पहला जुम्अ: पढ़ाया। इस में मदीना के 12 लोग शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने एक बकरी ज़िबह की। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि इस्लाम में पहले शख़्स थे जिन्होंने जुम्अ: की नमाज़ पढ़ाई। लेकिन एक रिवायत दूसरी भी है जिसके अनुसार हज़रत अबू उमामा असद बिन ज़ुरारह रज़ि थे जिन्होंने मदीना में पहला जुम्अ: पढ़ाया

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 87-88 ''मुसअब बिन उमैर रज़ि' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 1 पृष्ठ 171 बाब ज़िक्र अल-उकबुतस ऊला इसना अशरा, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

बहरहाल हज़रत मुसअब रज़ि पहले मुबल्लिग़ थे। हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो हज़रत असद बिन ज़ुरारा को साथ लेकर अन्सार के विभिन्न मुहल्लों में तब्लीग़ के लिए जाते थे। हज़रत मुसअब रज़ि की तब्लीग़ से बहुत से सहाबा मुसलमान हुए जिन में बड़े सहाबा जैसे हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि , हज़रत अबाद बिन बिशर, हज़रत मुहम्मद बिन मुसल्मा रज़ि, हज़रत उसीद बिन हुज़ैर रज़ि इत्यादि शामिल थे।

(अस्सीरतुन्नबविय्यी ले इब्ने हिशाम पृष्ठ 200 बाब 1, दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3पृष्ठ 321... दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

हज़रत मुसअब रज़ि की तब्लीग़ी चेष्ठाओं और कोशिशों का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने इस प्रकार वर्णन फ़रमाया है कि

''मक्का से विदा होते हुए इन 12 नौ मुसलमानों ने निवेदन किया कि कोई इस्लामी मुअल्लिम हमारे साथ भेजा जाए जो हमें इस्लाम की शिक्षा दे और हमारे मुशरिक भाईयों को इस्लाम की तब्लीग़ करे। आप ने मुसअब बिन उमैर रज़ि को जो क़बीला अब्दुल दार के एक निहायत मुख़लिस नौजवान थे उनके साथ रवाना कर दिया। इस्लामी मुबल्लिग़ इन दिनों में क़ारी या मुकरी कहलाते थे क्योंकि उनका काम अधिकतर क़ुरआन शरीफ़ सुनाना था क्योंकि यही तब्लीग़े इस्लाम का बेहतरीन माध्यम था। अत: मुसअब रज़ि भी यसरब में मुकरी के नाम से मशहूर हो गए। मुसअब रज़ि ने मदीना पहुंच कर असअद बिन ज़ुरारह रज़ि के मकान पर निवास किया जो मदीना में सबसे पहले मुसलमान थे और वैसे भी एक निहायत मुख़लिस और प्रभावकारी बुज़ुर्ग थे और इसी मकान को अपना तब्लीग़ी मर्कज़ बनाया और अपने फ़राइज़ की अदायगी में रात दिन व्यस्त हो गए और चूँकि मदीना में मुसलमानों को सामूहिक ज़िनद्गी नसीब थी और थी भी तुलनात्मक रूप से अमन की ज़िनद्गी, इसलिए असअद बिन ज़रारह रज़ि के परामर्श पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसअब रज़ि बिन उमैर रज़ि को जुम्अ: की नमाज़ की हिदायत फ़रमाई। इस तरह मुसलमानों की सामूहिक ज़िन्दगी का आरम्भ हो गया और अल्लाह तआला का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि थोड़े ही समय में मदीना में घर-घर इस्लाम का चर्चा होने लगा और ओस तथा ख़ज़रज बड़ी तेज़ी के साथ मुसलमान होने शुरू हो गए। कई अवस्थाओं में तो एक क़बीले का क़बीला एक दिन में ही सब का सब मुसलमान हो गया। अत: बनू अब्दाल का क़बीला भी इसी तरह एक ही वक़्त में इकट्ठा मुसलमान हुआ था। यह क़बीला अन्सार के मशहूर क़बीला ओस का एक मुमताज़ हिस्सा था और इस के रईस का नाम सअद बिन मआज़ था जो सिर्फ क़बीला बनू अब्दुल शहल के ही बड़े रईस न थे बल्कि सारे क़बीला ओस के सरदार थे। जब मदीना में इस्लाम का चर्चा हुआ तो सअद बिन मआज़ को यह बुरा मालूम हुआ और उन्होंने उसे रोकना चाहा। इस्लाम लाने से पहले यह सअद बिन मआज़ रज़ि बड़े विरोधी थे। ''मगर असअद बिन ज़रारा से उनकी बहुत क़रीब की रिश्तेदारी थी अर्थात वह एक दूसरे के ख़लेरे ज़ाद भाई थे और असअद मुसलमान हो चुके थे। इसलिए सअद बिन मआज़ ख़ुद सीधा दख़ल देते हुए रुकते थे कि कोई बुरा प्रभाव पैदा ना हो जाए। अत: उन्होंने अपने एक दूसरे रिश्तेदार उसीद बिन अलहज़ीर से कहा कि असद बिन ज़रारा के कारण से मुझे तो कुछ रोक है। मुसलमान हो गया है और इस के हाँ तब्लीग़ का साथ भी दे रहा है। ''मगर तुम जाकर मुसअब रज़ि को रोक दो । बजाय असअद बिन ज़रारह रज़ि को रोकने के हज़रत मुसअब रज़ि को रोक दो ''कि हमारे लोगों में यह बेदीनी ना फैलाईं और असद से भी कह दो कि यह तरीक़ा अच्छा नहीं है। उसीद क़बीला अब्दुल अशहल के बड़े रईसों में से थे। यहां तक कि उनका बाप जंग बुआस में सारे ओस का सरदार रह चुका था और सअद बिन मआज़ के बाद उसैद बिन अलहज़ीर का भी अपने क़बीला पर बहुत असर था। अत: सअद के कहने पर वह मुसअब बिन उमैर रज़ि और असअद बिन ज़रारा के पास गए और मुसअब से सम्बोधित हो कर ग़ुस्सा के अन्दाज़ में कहा। तुम क्यों हमारे आदमियों को बेदीन करते फिरते हो? इस से रुक जाओ वर्ना अच्छा न होगा। इस से पहले कि मुसअब कुछ जवाब देते असद ने धीरे से मुसअब से कहा कि यह अपने क़बीला के एक प्रभावकारी रईस हैं। उनसे बहुत नर्मी और मुहब्बत से बात करना। अत: मुसअब ने बड़े अदब और मुहब्बत के रंग में उसैद से कहा कि आप नाराज़ न हों बल्कि मेहरबानी फ़र्मा कर थोड़ी देर पधारें और ठंडे दिल से हमारी बात सुन लें और इस के बाद कोई राय क़ायम करें। उसैद इस बात को माक़ूल समझ कर गए।'' नेक फितरत थे, "और मुसअब ने उन्हें क़ुरआन शरीफ़ सुनाया और बड़ी मुहब्बत के रंग में इस्लामी शिक्षा से सूचित किया। उसैद पर इतना असर हुआ कि वहीं मुसलमान हो गए और फिर कहने लगे कि मेरे पीछे एक ऐसा शख़्स है कि जो अगर ईमान ले आया तो हमारा सारा क़बीला मुसलमान हो जाएगा। तुम ठहरो में उसे अभी यहां भेजता हूँ। यह कह कर उसैद उठकर चले गए और किसी बहाना से सअद बिन मआज़ को मुसअब बिन उमैर रज़ि और असअद बिन ज़रारा की तरफ़ भिजवा दिया। सअद बिन मआज़ आए और बड़े क्रोधित हो कर असअद बिन ज़रारा से कहने लगे कि देखो असअद तुम अपनी रिश्तेदारी का नाजायज़ फ़ायदा उठा रहे हो और यह ठीक नहीं है।" अभी मैं रिश्तेदारी की वजह से चुप हूँ लेकिन नाजायज़ फ़ायदा न उठाओ। "इस पर मुसअब रज़ि ने इसी तरह नरमी और मुहब्बत के साथ उनको ठंडा किया।" जैसे पहले को किया था "और कहा कि आप ज़रा थोड़ी देर तशरीफ़ रखकर मेरी बात सुन लें और फिरा अगर इस में कोई चीज़ आरोप योग्य हो तो (बे-शक रद्द कर दें। सअद ने कहा। हाँ यह बात तो उचित है और अपना नेज़ा टेक कर बैठ गए और मुसअब रज़ि ने इसी तरह पहले क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत की और फिर अपने दिलकश रंग में इस्लामी उसूल की व्याख्या की। अभी ज़्यादा देर न गुज़री थी कि यह बुत भी राम हो था।" अर्थात सअद बिन मआज़ रज़ि जो थे वह भी ये बातें सुन के राम हो गए।" अत: सअद ने सुनत के तरीका पर ग़ुसल कर के कलिमा शहादत पढ़ दिया और फिर उस के बाद सअद बिन मआज़ और उसैद बिन अलहज़ीर दोनों मिलकर अपने क़बीला वालों की तरफ़ गए और सअद रज़ि ने उनसे मख़सूस अरबी अंदाज़ में पूछा कि हे बनी अब्दुल अशहल तुम मुझे कैसा जानते हो? सब ने एक ज़बान हो कर कहा कि आप हमारे सरदार और सरदार इब्न सरदार हैं और आपकी बात पर हमें कामिल भरोसा है। सअद ने कहा तो फिर मेरे साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं जब तक तुम अल्लाह और इस के रसूल पर ईमान न लाओ। इस के बाद सअद ने उन्हें इस्लाम के उसूल समझाए और अभी उस दिन पर शाम नहीं आई थी कि सारा क़बीला मुसलमान हो गया और सअद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो और उसैद रज़ि ने ख़ुद अपने हाथ से अपनी क़ौम के बुत निकाल कर तोड़े।

सअद बिन मआज़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और उसैद बिन अल-हुज़ेर रज़ि जो उस दिन मुसलमान हुए दोनों चोटी के सहाबा में शामिल होते हैं और अन्सार में तो' हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि "अन्सार में तो निसन्देह उनका बहुत ही ऊंचा स्थान पाया था। कोई शक नहीं इस में, बहुत बुलंद थे। "शि, रूप से सअद बिन मअज़ रज़ि को तो अन्सार मदीना में वह पोज़ीशन हासिल हुई जो मुहाजरीन में हज़रत अबू बकर रज़ि को प्राप्त थी। यह नौजवान निहायत दर्जा मुख़लिस, निहायत दर्जा वफ़ादार और इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक का एक निहायत जान कुरबान करने वाला आशिक़ निकला और चूँकि वह अपने क़बीला का बड़ा रईस भी था और निहायत ज़हीन था इस्लाम में उसे वह सम्मान हासिल हुई जो सिर्फ ख़ास बल्कि ख़ास सहाबा को हासिल था और "हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि "और निसन्देह। इस की जवानी की मौत पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह उपदेश कि सअद रज़ि की मौत पर तो रहमान का अर्श भी हरकत में आ गया है। एक गहरी सच्चाई पर आधारित था। अत: इस तरह केज़ी के साथ ओस तथा ख़ज़रज में इस्लाम फैलता गया। यहूद ख़ौफ़ भरी आँखों के साथ यह नज़्ज़ारे देखते थे और दिल ही दिल में यह कहते थे कि ख़ुदा जाने क्या होने वाला है।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 224 से 227)

हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की तब्लीग़ से बहुत से लोग मुसलमान हुए। आप सन 13 नबवी में हज के अवसर पर मदीना से 70 अन्सार का वफ़द लेकर मक्का रवाना हुए। इस का ज़िक्र करते हुए सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में, विभिन्न रिवायतों से लेकर ,हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यह लिखा है कि

''अगले साल अर्थात 13 नबवी के ज़ील हजा के महीना में हज के अवसर पर ओस और ख़ज़रज के कई सौ आदमी मक्का में आए। उनमें 70 आदमी ऐसे शामिल थे जो या तो मुसलमान हो चुके थे और या अब मुसलमान होना चाहते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए मक्का आए थे। मुसअब रज़ि बिन उमैर रज़ि भी उनके साथ थे। मुसअब रज़ि की माँ ज़िन्दा थी और यद्यपि मुशरिका थी मगर उनसे बहुत मुहब्बत करती थी। जब उसे उनके आने की ख़बर मिली तो उसने उनको कहला भेजा कि पहले मुझ से आकर मिल जाओ फिर कहीं दूसरी जगह जाना। मुसअब रज़ि ने जवाब दिया कि मैं अभी तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नहीं मिला। आप से मिलकर फिर तुम्हारे पास आऊँगा। अत: वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए। आप से मिलकर और ज़रूरी हालात निवेदन कर के फिर अपनी माँ के पास गए। " यह बात सुन कर, यह देखकर कि पहले मुझे मिलने नहीं आए "वह बहुत जली भुनी बैठी थी। उनको देखकर बहुत रोई और बड़ा शिकवा किया। मुसअब रज़ि ने कहा माँ मैं तुम से एक बड़ी अच्छी बात कहता हूँ जो तुम्हारे लिए बहुत ही लाभदायक है और सारे झगड़ों का फ़ैसला हो जाता है। उस ने कहा वह क्या है? मुसअब रज़ि ने धीरे से जवाब दिया। बस यही कि बुत की पूजा छोड़ कर मुसलमान हो जाओ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आओ। वह पक्की मुशरिका थी सुनते ही शोर मचा दिया कि मुझे सितारों की क़सम है मैं तुम्हारे धर्म में कभी दाख़िल न होंगी और अपने रिश्तेदारों को इशारा किया कि मुसअब रज़ि को पकड़ कर क़ैद कर लें मगर वह भाग कर गए।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 227)

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के ज़िक्र में अभी कुछ वर्णन बाकी है जो जारी रहेगा लेकिन क्योंकि आज दो जनाज़ा ग़ायब हैं जो मैं पढ़ाऊंगा। उनका ज़िक्र भी करना है। इसलिए यहां मैं हज़रत मुसअब रज़ि का ज़िक्र ख़त्म करता हूँ। इंशा अल्लाह अगले ख़ुत्बा में वर्णन होगा।

जो जनाज़े पढ़ाने हैं उनमें से एक अदरमीण मलिक मुनव्वर अहमद जावेद साहिब इब्न आदरणीय मलिक मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब हैं जो 22 फरवरी को 84 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनको एक अर्से से जिगर की तकलीफ़ थी जिसकी वजह से दस दिन ताहिर हार्ट में इलाज होता रहा इस के बाद आप अल्लाह तआला के समक्ष हाज़िर हो गए। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा चार बेटे और दो बेटियां हैं। मलिक मुनव्वर अहमद जावेद साहिब के दादा (सूबेदार मेजर हज़रत डाक्टर ज़फ़र हस्न साहिब रज़ि थे और उनके नाना हज़रत शैख़ अब्दुल करीम साहिब रज़ि थे जिनका सम्बन्ध ग़ाज़ीपुर ज़िला गुरदासपुर से था और दादा जो थे वह धर्मकोट रंधावा के थे। दोनों बुज़ुर्गों ने अर्थात दादा और नाना ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की और सहाबी होने का सौभाग्य पाया। मलिक मुनव्वर जावेद साहिब की शादी 1968 ई में सलमा जावेद साहिबा से हुई जो सूफ़ी हामिद साहिब मरहूम की बेटी थीं। हज़रत हाफ़िज़ सूफ़ी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब रज़ि मुबल्लिग़ मारीशस सहाबी हज़रत मसीह मौऊद की पोती इसी तरह हज़रत डाक्टर ज़फ़र हस्न साहिब रज़ि सहाबी हज़रत मसीह मौऊद की नवासी हैं। हज़रत सूफ़ी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब मिबल्लिग़ मारीशस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तीन सौ तेरह सहाबा में से थे। इस तरह मुल्क मुनव्वर जावेद साहिब के दादा और नाना और उन की पत्नी के दादा और नाना चारों अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सहाबी थे।

अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ करने के बारे में ज़िक्र करते हुए मलिक साहिब ने एक अवसर पर कहा कि वक़्फ़ का ध्यान मुझे इस तरह पैदा हुई कि जब में 1982 ई के अन्सारुल्लाह के इज्तिमा में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहमहुल्लाह की तक़रीर सुन रहा था तो हुज़ूर ने अपनी तक़रीर में वक़्फ़ के महत्व का वर्णन किया और तक़रीर के अन्त पर यह वाक्य कहा जिसका अभिप्राय यह था कि क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हारा आख़िरी सांस वक़्फ़ में निकले। कहते हैं यह वाक्य जो था यह मेरे लिए एक turning point था। मैं सोचता रहा कि क्या मैं भी वक़्फ़ कर सकूँगा। बहरहाल उस के बाद उन्होंने अपने आप को वक़्फ़ के लिए पेश करने का फ़ैसला किया और 10 अगस्त 1983 ई को उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहमहुल्लाह की सेवा में वक़्फ़ ज़िन्दगी का निवेदन किया जिस पर हुज़ूर रहेमहुल्लाह ने 18 अगस्त 1983 ई को आपका वक़्फ़ स्वीकार फ़रमाया और वक़्फ़ मंज़ूर फ़रमाते हुए यह इरशाद फ़रमाया कि आप अपना काम समेट कर बेशक आ जाऐं। इस वक़्त यह अपना कारोबार भी करते थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे ने 28 अगस्त 1983 ई को आपका आरम्भिक तक़र्रुर किया जो वकालत सनअत तथा तिजारत में था। तथा 1 अक्तूबर 1983 ई से आप वकालत सनअत तथा तिजारत में हाज़िर हो गए। वक़्फ़ से पहले आपने आरम्भिक 16 साल सेक्रिटेरियट हकूमत पंजाब में सर्विस की। इस के बाद लगभग दस साल व्यक्तिगत कारोबार करते नवम्बर 1983 ई में आप मैनेजर रिसाला रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ निर्धारित हुए। 1984 ई में मुआविन नाज़िर ज़यााफ़त मुक़र्रर हुए। 20 अप्रैल 1987 ई से जुलाई 2016 ई तक बतौर नायब नाज़िर ज़यााफ़त फ़राइज़ अदा करने की तौफ़ीक़ मिली। 1990 ई में जब कमेटी कफ़ालत यकसद यतामा स्थापित हुई तो कफ़ालत यकसद यतामा की कमेटी के पहले सैक्रेटरी निर्धारित हुए और लगभग बीस साल तक आपको इस सेवा की तौफ़ीक़ मिली। 1968 ई से 1970 ई तक मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान में बतौर क़ाइद ज़िला और इलाक़ा लाहौर रहे और यह लगभग दस साल का अरसा सेवा का बनता है। अन्सारुल्लाह में 1984 ई से 2014 ई तक उनको सेवा का मौक़ा मिला। 1984 ई से 2014 ई इकत्तीस साल तक अन्सारुल्लाह पाकिस्तान में क़ाइद तहरीक जदीद, क़ाइद तर्बीयत और क़ाइद इशाअत और फिर यह आख़िरी पाँच साल नायब सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह पाकिस्तान सेवा की तौफ़ीक़ मिली।

जब यह सरकारी नौकरी करते थे तो उस समय की घटना वर्णन करते हुए एक बार मलिक साहिब ने कहा कि सर्विस के दौरान हमारे एक इंचार्ज थे। बड़ा द्वेष रखने वाले इन्सान थे और अक्सर अपने मौलवियों को मेरे पास मुबाहिसा के लिए लाते थे। इस तरह एक बार वह अल्लामा प्रोफ़ैसर ख़ालिद महमूद साहिब को लाए जो उस वक़्त के बड़े माहिर आलिम थे। उनसे मुबाहिसा शुरू हुआ। जब इन आलम साहिब से कोई बात न बन पड़ी तो उन्होंने ग़ुस्सा में गालियां देना शुरू कर दीं जो आम मौलवियों का तरीक़ा है। तो कहते हैं कि मेरे जो अफ़्सर इंचार्ज थे वह डर गए कि कहीं मामला ख़राब ही ना हो जाए। इस पर इन अल्लामा साहिब ने मेरे इंचार्ज को जिनका नाम अब्दुर रहमान था, हौसला देने के लिए कहा कि, मौलवी-साहब के शब्द बड़े ऐसे हैं जो दिल से यह यक़ीन रखते हैं कि जमाअत के लोगों का अल्लाह तआला के साथ सम्बन्ध है। कहते हैं कि मौलाना साहिब ने कहा कि , इन लोगों ने ख़ुदा , रसूल और किताब अर्थात कलामे इलाही पर इतने ज़ुल्म किए कि अल्लाह उनको हलाक कर देता अर्थात कि अल्लाह तआला पर, रसूल पर और क़ुरआन करीम पर अहमदियों ने इतने ज़ुल्म किए हैं कि अल्लाह तआला उनको हलाक कर देता लेकिन क्यों हलाक नहीं किया? मौलाना साहिब कहने लगे ये हर बार इस वजह से बच जाते हैं। ये क्यों बच जाते हैं ?क्योंकि ये अपनी नमाज़ों में ख़ूब रोते हैं। तो मलिक साहिब कहते हैं कि मैंने उनसे कहा। अल्लामा साहिब यह बात आप मुझे लिख कर दे दें। कहने लगे क्यों? पंजाबी में कहने लगे कि 'इज में लिख देवाँ तय कल तुसी अख़बार विच छपवा देवोगे। तो मतलब यही है कि उनको यह स्वीकार करना पड़ा कि अहमदियों का रोना दोना जो है वह हर वक़त उनके काम आता है और अल्लाह तआला उनकी सुनता है। इस के बावजूद कि हम ग़लत हैं फिर भी यह यक़ीन है कि अल्लाह तआला हमारी सुनता है। अल्लाह तआला उन लोगों की आँखें भी खोले और क़ौम को जो उन्होंने ग़लत रस्ते पर डाला हुआ है, ग़लत रहनुमाई कर रहे हैं तो अल्लाह तआला क़ौम को उनके धोखे और फ़रेबों से बचाए।

हमारे मुआविन नाज़िर ज़यााफ़त उसामा अज़हर साहिब हैं। कहते हैं कि मलिक मुनव्वर अहमद जावेद साहिब उच्च स्तर की इंतिज़ामी सलाहीयतों के मालिक थे। रातों को उठकर दारुल ज़यााफ़त का चक्कर लगाते। कारकुनों से जायज़ा लेते और मौसम के अनुसार उनके लिए चाय और अंडों इत्यादि का प्रबन्ध करवाते। कारकुनाने दारुल ज़यााफ़त से उनका बहुत मुहब्बत, शफ़क़त और हमदर्दी का

व्यवहार था। हर कारकुन के घरेलू हालात से बाख़बर रहते और ख़ामोशी से हर संभव माली मदद भी करते।

उनके दामाद नदीम साहिब कहते हैं और भांजे भी हैं कि मलिक साहिब ने एक बार उनको कहा एक पहली बात तो यह है कि मुझे हमेशा नमाज़ों की तहरीक करते और ख़िलाफ़त से मुहब्बत और धर्म की सेवा की नसीहत करते रहते थे। कहते हैं उन्होंने एक बार मुझे बताया कि रिटायरमैंट के बाद एक दिन मैंने फ़ैसला किया कि चूँकि मैं रिटायर्ड हो गया हूँ इसलिए तौई चंदों को आधा कर देता हूँ। आमद, इलाउंस जो है वह अब कम हो गया है अत: मैंने अपने वादों की लिस्ट बनाई और सो गया। रात को कहते हैं मैं ने ख़्वाब में देखा कि अल्लाह तआला मेरे पास आया है और अल्लाह तआला ने कहा कि मैं सारे संसार का ख़ुदा हूँ। सुना है कि तुमने अपने चंदे आधे कर दिए हैं। आओ मैं तुम्हें अपनी कायनात की सैर कराऊँ। अत: अल्लाह तआला ने मुझे ख़्वाब में अपने पहाड़ दिखाए, जंगल वादियां दरिया और बाग़ा दिखाए और कहा कि जब सब का मैं मालिक हूँ तो तुम्हें किस बात की फ़िक्र। कहते हैं यहां तक यह बात मैंने सुनी और मेरी आँख खुल गई और मैंने जो चंदे आधे करने का फ़ैसला किया था वह छोड़ दिया और अपने चंदे बाक़ायदा इस तरह अदा करने शुरू दिए।

उनकी बेगम बताती हैं कि वक़्फ़ ज़िन्दगी से पहले जब यह कारोबार किया करते थे तो बहुत सी रक़म जेब में डाल कर चादर ओढ़ कर सर्दीयों की रातों को सड़क पर निकल जाया करते थे और कहते थे उस वक़्त ज़रूरत मंद मिलेगा तो वह हक़ीक़त में बहुत ज़रूरतमंद होगा। अत: एक बार एक आदमी खड़ा था जो बहुत परेशान था और उसने बताया कि इस की माता बहुत सख़्त बीमार है और इस के पास पैसे नहीं हैं। उन्होंने वे सारे पैसे उस को दे दिए और वापस घर आ गए।

आसिफ़ मजीद साहिब मुआविन नाज़िर ज़याफ़त हैं, मुरब्बी हैं। कहते हैं कि कई बार भीड़ ज़्यादा होने की अवस्था में मेहमानों को रिहायश की परेशानी होती थीं और कुछ मेहमान तो सब के सामने और दफ़्तर में आकर भी कई बार सख़्त बातें और शब्द कह देते थे मगर मरहूम बड़ा मुस्कुरा कर सारी बात सुनते और कई बार तो कहते हैं मैंने उन्हें हाथ जोड़ कर माफ़ी मांगते हुए भी देखा है। तो मरहूम जिन मेहमानों से माफ़ी मांग रहे होते उनमें से कई उनके बच्चों की उम्र के भी होते थे। एक बार मैंने मेहमानों के जाने के बाद इज़हार किया कि मलिक साहिब मुझे बहुत तकलीफ़ हुई है कि आपने इस बच्चे से हाथ जोड़ कर माफ़ी मांगी है। तो कहने लगे तुम्हें क्यों तकलीफ़ हुई है? हाथ तो मैंने जोड़े हैं तुमने नहीं। और याद रखो कि जिसके ये मेहमान हैं अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वह तो मेहमानों को मनाने के लिए नंगे-पाँव भाग कर मेहमानों को राज़ी कर के वापस लाए थे।

फिर आसिफ़ साहिब कहते हैं कि एक बार ख़ाकसार उनके दफ़्तर में बैठा हुआ था। उन्होंने एक घटना सुनाई कि एक दिन एक बुज़ुर्ग बहुत ग़ुस्सा से मेरे दफ़्तर में दाख़िल हुए और पंजाबी में मलिक साहिब से सम्बोधित हो कर कहा कि तुम मल्क मुनव्वर जावेद हो। तूं ई मलिक मुनव्वर जावेद एं'। मलिक साहिब कहने लगे कि मैं ही मलिक मुनव्वर जावेद हूँ। तो बुज़ुर्ग मेहमान सम्बोधित हुए और कहने लगे पंजाबी में कि "तेरे पियो दा लंगर ख़ाना ए"। तुम्हारे बाप का यह लंगर ख़ाना है? मलिक साहिब ने जवाब दिया कि नहीं बाबा जी। यह तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का लंगर ख़ाना है। मेरे और आपके साझे बाप का लंगर ख़ाना है। यह जवाब सुन कर वह बुज़ुर्ग सन्तुष्ट हो गए और बड़े आराम से और मुहब्बत से अपना मामला वर्णन किया और चले गए।

कई बार मेहमान भी ज़्यादती कर जाते हैं। मुझे भी शिकायतें आती हैं कि जी दारुल ज़ियाफ़त में यह व्यवहार हुआ, वह सुलूक हुआ लेकिन पता करो तो पता लगता है कि मेहमानों में भी सब्र नहीं है। ठीक है हमें, हमारे विभाग को उनकी इज़्ज़त करनी चाहिए लेकिन मेहमानों को भी चाहिए कि उच्च आचरण को प्रकट करें और जब कई बार ऐसी अवस्था हो तो प्रशासन से सहयोग करने की कोशिश क्या करें। बहरहाल मलिक साहिब ने अपने वक़्फ़ का हक़ अदा कर दिया। और जब मैं नाज़िर आला था तो उस वक़्त में नाज़िर ज़याफ़त भी था और यह नायब नाज़िर ज़याफ़त थे और मैंने देखा है कि जमाअत के माल की बड़ी दर्द से फ़िक्र रखते थे और हक़ बात कहने से कभी नहीं रुकते थे। बावजूद उस के कि मेरे नायब थे अगर जमाअत के हित में उनके नज़दीक कोई चीज़ बेहतर होती और मैंने कोई और बात कही है तो बग़ैर झिझक मेरी राय के ख़िलाफ़ मश्वरा देते और कहते कि यह इस तरह हो तो ज़्यादा बेहतर है और यही ख़ूबी है जो हर वाकिफे ज़िन्दगी में होनी चाहिए कि अपनी राय को अदब का लिहाज़ रखते हुए सही तरह पेश करें। ख़िलाफ़त से वफ़ा का सम्बन्ध तो बहुत बुलंद था जिसका इज़हार उनके हर ख़त से होता था और जब भी मिले, हर मुलाक़ात से इस का अंदाज़ा होता था , वह मुझे दो बार मिले हैं

अल्लाह तआला उनसे रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनके बीवी और बच्चों को सब्र और हौसला भी प्रदान फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की इन लोगों को भी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा आदरणीय प्रोफ़ैसर मुनव्वर शमीम ख़ालिद साहिब इब्न शेख़ महबूब आलम ख़ालिद साहिब का है जो 16 फरवरी 2020 ई को रबोह में लगभग 81 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। जैसा कि मैंने कहा उनके पिता शेख़ महबूब आलम ख़ालिद साहिब थे जो पहले टी आई (TI) कॉलेज में प्रोफ़ैसर थे। फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-सालिस ने उनको नाज़िर बैयतुल माल आमद बनाया। बड़ा लंबा अरसा यह नाज़िर बैयतुल माल आमद रहे। फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने इन को सदर सदर अंजुमन अहमदिया का निर्धारण किया। यह शमीम ख़ालिद साहिब उनके सबसे बड़े बेटे थे। उनके पीछे रहने वालों में उनकी दूसरी पत्नी शाहिदा मुनव्वर शमीम साहिबा हैं और पहली पत्नी से जो वफ़ात पा गई थीं उनका एक बेटा है। ख़ालिद अनवर साहिब जो कैनेडा में हैं। 1964 ई में जब हज़रत ख़लीफ़ा सालस कॉलेज के प्रिंसिपल थे और सदर सदर अंजुमन अहमदिया भी थे उस वक़्त उन्होंने मुनव्वर शमीम ख़ालिद साहिब का निकाह मस्जिद मुबारक में पढ़ाया था और इस अवसर पर हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने यह भी वाक्य कहा कि प्रोफ़ैसर मुनव्वर शमीम ख़ालिद जो मेरे गहरे दोस्त प्रोफ़ैसर महबूब आलम ख़ालिद साहिब के बेटे हैं मुझे अपने बेटों की तरह प्रिय हैं। ख़लीफ़तुल मसीह अल-सालिस का उनके पिता साहिब के साथ भी बहुत सम्बन्ध था। मज्लिस अन्सारुल्लाह मर्कज़िया पाकिस्तान में उनका ख़िदमतों का सिलसिला 28 साल पर फैला है। जब तक कॉलेज नेशनलाइज़ड नहीं हुए यह टी आई कॉलेज में प्रोफ़ैसर रहे। इस के नेशनलाइज़ड होने के बाद भी मेरा ख़्याल है उनका ज़्यादा समय रब्वह के कॉलेज में ही गुज़रा

यह तो मैंने बता दिया कि वह महबूब आलम ख़ालिद साहिब के बेटे थे और उनके शमीम ख़ालिद साहिब के दादा मौलवी फ़र्ज़ंद अली साहिब ख़ान साहिब थे। मौलवी फ़र्ज़ंद अली साहिब जो भूतपूर्व इमाम मस्जिद लंदन भी रहे हैं और नाज़िर बैयतुल माल भी रहे हैं।

मुनव्वर शमीम ख़ालिद साहिब की दूसरी पत्नी शाहिदा साहिबा वर्णन करती हैं कहती हैं कि मुनव्वर शमीम ख़ालिद साहिब बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे। सबसे पहला गुण समय के ख़लीफ़ से बहुत अधिक मुहब्बत और अक़ीदत और इताअत थी और ख़ुत्बों को बहुत ग़ौर से सुनते थे और फिर बड़े नकात निकाला करते थे। रोज़ा नमाज़ के पाबन्द , तहज्जुद पढ़ने वाले, पांचों समय नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने के पाबंद, बीमारी की वजह से जब मस्जिद जाना ख़त्म हो गया तो बहुत महसूस किया करते थे और अक्सर रोते रहते थी कि मैं मस्जिद नहीं जा सकता। उन्होंने अपनी बीमारी का समय भी बड़े सब्र और हौसले से और हिम्मत से गुज़ारा है। कभी उफ़ तक नहीं की। न कोई गिला ज़बान पर लाए। हमेशा अलहमदो लिल्लाह ज़बान पर रहा। धर्म की सेवा में इख़लास तथा वफ़ा और मेहनत उनकी नुमायां खूबियां थीं। बड़ी ख़ामोशी से सेवा करने वाले थे। निहायत शफ़ीक़, वफ़ादार और मुहब्बत से पेश आने वाले वजूद थे। कॉलेज में जब पढ़ाते रहे हैं तो कुछ अरसा में भी उनका शागिर्द रहा हूँ और जब मैं अमीर मक़ामी अर्थात नाज़िर आला था तो उस के बाद इंतिहाई अदब और सम्मान का सुलूक उन्होंने मुझ से रखा। कभी यह प्रभाव नहीं दिया कि तुम मेरे शागिर्द रहे हो। निज़ाम ख़िलाफ़त और निज़ाम जमाअत की इंतिहाई दर्जा पाबंदी करने वाले और इताअत करने वाले थे और ख़िलाफ़त के बाद भी उनका जो सम्बन्ध का इज़हार था वह ग़ैरमामूली था।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। अपने प्यारों के क़दमों में जगह दे। उनके पीछे रहने वालों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। जुम्अ: की नमाज़ के बाद इन दोनों का जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। इंशा अल्लाह।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 17 मार्च 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 10 बजकर 15 मिनट पर मस्जिद के मर्दाना हाल में पधारे जहां रशिया, ताजिकस्तान और एस्टोनिया (Estonia) से आने वाले वफ़दों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मेहमानों ने निवेदन किया कि जलसा बहुत अच्छा था। मुनज़्ज़म था और बड़े उच्च स्तर पर था।

एस्टोनिया से आने वाले एक मेहमान से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप नए अहमदी हैं। आप सूरत फ़ातिहा अरबी में याद करें और फिर उस का अनुवाद सीखें। और इस को बार-बार पढ़ें। इय्याका नअबदों वइय्याक नस्तईन भी बार-बार पढ़ें। ख़ुदा तआला से ही मदद चाहो और इस की ही इबादत करो। इस के अतिरिक्त धार्मिक इल्म भी सीखें। और अपने आप को करें।

मास्को से आने वाले एक नौ मुबाइअ ने निवेदन किया कि एक साल से अहमदी हों। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपकी मज़हबी बैकग्रांऊड किया है। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि कैथोलिक चर्च से सम्बन्ध था। बीस साल पहले इस्लाम स्वीकार किया था और अब एक साल से अहमदी हूँ।

महोदय के एक सवाल पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि आख़िरी ज़माना में एक सुधारक मसीह महदी आएगा और इस्लाम का पुनर्जागरण करेगा। अत: वह मसीह महदी आया और आप बानी जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम हैं। आपने क़ुरआन करीम की तीस आयतें अपनी किताबों में लिखी हैं और बताया है कि उनसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात प्रमाणित है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया समस्त मुसलमान मसीह अलैहिस्सलाम की द्वित्तीय बारे आने का इंतज़ार कर रहे हैं। हम कहते हैं कि जिस मसीह ने आना था वह आ चुका है और क़ुरआन करीम और अहादीस में मसीह महदी के आने के जो निशान हैं वे भी पूरे हो चुके हैं। बहुत से मुसलमान विशवास रखते हैं कि निशान तो पूरे हो चुके हैं लेकिन वह फिर भी मसीह के इंतज़ार में बैठे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया चांद सूरज ग्रहण का निशान भी पूरा हो चुका है। अभी यह निशान ज़ाहिर न हुआ था तो लोगों ने कहा कि चांद सूरज ग्रहण का निशान पूरा नहीं हुआ। अत:1894 ई में हदीस में वर्णन की गई समस्त निशानियों के साथ चांद सूरज ग्रहण लगा। और फिर अगले साल1985 ई में वैस्ट Hemisphere मैं चांद और सूरज ग्रहण हुआ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मुस्लिम उम्मत सुधारक चाहती है लेकिन अभी तक इंतज़ार कर रही है। अगर अब नहीं आना तो फिर कब आना है। हम उनको बताते हैं कि ये निशान हैं और ये पेशगोईयां हैं और सब पूरी हो चुकी हैं और मसीह महदी के आने का यही समय है।

हुज़ूर अनवर ने महोदय से फ़रमाया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि की किताब दअवतुल अमीर का रशियन अनुवाद हो चुका है इस को पढ़ें।

ताजिकस्तान देश से आने वाले एक दोस्त ने निवेदन किया कि उनकी उम्र 70 साल है। अगर जमाअत अहमदिया इतनी पुरानी है तो उनको पहले मालूम क्यों न हुआ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम1400 सौ साल पुराना है तो अमरीका महाद्वीप के कुछ दूर के देश द्वीपों जैसे हैं कि वहां के लोगों को अब इस्लाम का इल्म हुआ है। एक पादरी ने भी इस बात का इज़हार किया था किअमुक अमुक क्षेत्र में ईसाईयत का पैग़ाम नहीं पहुंचा इसलिए उनसे बाज़पुर्स न होगी। मालूम होता है कि ईसाइयत वहां नहीं पहुंची

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अब प्रसार का ज़माना है। मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना है।130 साल में एक छोटे से गांव से पैग़ाम निकल कर 212 देशों में फैल गया है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया धर्मों की एक तारीख़ है। इस को देखें। धर्म इसी तरह क्रमश: फैले हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जहां तक पैग़ाम पहुंचाने की राह में रोकूँ का सवाल है वे तो कुछ हुकूमतों की तरफ़ से क़ायम होती रही हैं। मौलवी ज़हूर हुसैन साहिब बुख़ारा को भी तो क़ैद कर लिया गया था कि वह इस्लाम का पैग़ाम न पहुंचा सकें।

मास्को से जमाअत के स्थानीय मुअल्लिम रुस्तम हम्माद वली साहिब भी जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए थे। महोदय ने निवेदन किया कि जलसा सालाना जर्मनी में भी आने का अवसर मिला है। यहां भी दूर दूर के देशों से लोग आए हैं। जमाअत जर्मनी ने बड़ी तरक़्क़ी की है। देखकर बहुत ख़ुशी होती है। यह जलसा भी इंटरनैशनल स्तर का जलसा बन गया है। लोग इस से लाभान्वित हो रहे हैं।

एक मेहमान अब्दुस्सतार बूबवाएवस (Absussator Boboev)पोलैंड से जलसा में शामिल हुए जो ताजिक हैं, वह अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं मैंने अहमदियों के बारे में सुना था कि वह मुसलमान नहीं हैं और शराब को जायज़ समझते हैं। जलसा में शामिल होने से पहले अहमदियों की 'मस्जिद सुब्हान'देखी और इस में नमाज़ पढ़ी तो पता लगा कि यह लोग मुसलमान हैं और पाँच अरकान दीन पर अनुकरण करते हैं। जलसा में शामिल हो कर पता चला कि यह इमाम मह्दी को मानते हैं और बिलकुल शराब नहीं पीते और क़ुरआन करीम के आदेशों पर अनुकरण करते हैं। यहां जलसा में शामिल होने के बाद बहुत अधिक मालूमात अहमदिया जमाअत के बारे में मिलीं और मैं बुनियादी तौर पर आपको मुसलमान समझने लगा हूँ। अरकान दीन और अरकान इस्लाम वही हैं जो मुसलमानों के होते हैं। इमाम अबू हनीफा को आप लोग इमाम समझते हैं और उनके फ़िक़्ह पर अनुकरण करते हैं। मुझे इस बारे में इल्म प्राप्त हुआ है। जलसा में बहुत कुछ अच्छा लगा। यहां पर हज के बाद दूसरी बार इतने मुसलमानों को इकट्ठे होते देखा। ख़लीफ़ा से मुलाक़ात बहुत अच्छा तजुर्बा था। उनका चेहरा बहुत नूरानी था। जब मैं ताजिकस्तान होता था तो एम.टी.ए पर उनको देखा करता था और बहुत प्रभावित होता था। वह बहुत नेक इन्सान हैं।

मिर्ज़ा रहीम साहिब और उनके तीन साथी ताजिकस्तान से हैं और लथवीनया में होते हैं। यह अपने और अपने साथ आए हुए तीनों ताजिक साथियों की प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए कहते हैं: जलसा हमारे लिए बहुत अच्छा और प्रभावित करने वाला था। प्रबन्ध का स्तर बहुत अच्छा था और इस से पता चलता है कि जमाअत ने अपने क़दम मज़बूत कर लिए हैं। जलसा के प्रोग्रामों में कोई भी तब्दीली न करना और किसी प्रोग्राम में भी देर न करना इस बात की दलील है कि जलसा में जमाअत का प्रबन्ध का स्तर बहुत अच्छा है। हमें यह बात बहुत अच्छी लगी कि मुसलमानों में से एक गिरोह ने यूरोपीयन लोगों का भरोसा प्राप्त कर लिया है। हम लोग जो अभी नए नए यूरोप में आए हैं हम ने इस से एक अच्छा तजुर्बा प्राप्त किया है कि हम किस तरह यूरोपीयन देशों में काम कर सकते हैं। जलसा में हर एक क़ौम तथा मिल्लत के लोग बिना किसी रोक के शामिल थे। हमें जमाअत का नारा कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" बहुत अच्छा लगा।

इस के इलावा हमें जमाअत अहमदिया के इमाम मिर्ज़ा मसरूर अहमद की बातें बहुत अच्छी लगीं खासतौर पर यह कि"उग्रवाद का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं और इस्लाम मेहरबानी, मिलजुल कर रहने और एक दूसरे को समझने का नाम है।'

आख़िर पर हम जलसा के समस्त कारकुनों का और खासतौर पर उनका जिन्होंने हमें इस तरह के शौकत वाले जलसा में शामिल होने की दावत दी, दिल की गहराईयों से शुक्रिया अदा करते हैं और उन के लिए नेक आशाएम रखते हैं। यह मुलाक़ात 10 बजकर 40 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हाथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया और तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इंडोनेशिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद 10 बजकर 45 मिनट पर इंडोनेशिया से आने वाले वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात का प्रोग्राम शुरू हुआ। इंडोनेशिया से इस साल 35 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ। जिन में 23 औरतें और 12 मर्द शामिल थे।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर वफ़द के मेंबरों ने निवेदन किया कि जलसा सालाना के समस्त प्रबन्ध बहुत अच्छे थे। सारे काम बड़े मुनज़्ज़म तरीक़ पर हुए हैं।

हुज़ूर अनवर की सेवा में वफ़द के एक मैंबर ने निवेदन किया कि हमारी जमाअत में काफ़ी नए अहमदी हैं इन से चन्दा प्राप्त करना काफ़ी मुश्किल काम है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पहले उनकी तर्बीयत करो। ईमान लाना फ़र्ज़ है। पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं उनकी अदायगी की तरफ़ ध्यान दिलाओ। रोज़ा फ़र्ज़ है। फिर

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

बाद में माली क़ुर्बानी फ़र्ज़ है। पहले उनकी तर्बीयत करो। तीन साल की तर्बीयत का समय इसलिए ही रखा हुआ है कि उनकी तर्बीयत हो जाए फिर उनको चन्दा के निज़ाम में शामिल करें, क़ुर्बानी की भावना दिल से निकलनी चाहिए। सहाब रज़ि ने दिल से इस्लाम को स्वीकार किया और फिर क़ुर्बानियां पेश कीं। चन्दा कोई टैक्स नहीं है बल्कि ख़ुदा की रज़ा के लिए देना है। नौ मुबाईन को शुरू से ही यह आदत डालें कि तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद के लिए चन्दा कुछ न कुछ ज़रूर दें।

एक औरत ने निवेदन किया कि ग़ैर अहमदी मुझ से नफ़रत करते हैं और मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। मैं क्या करूँ?इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दावा किया लोग आप से नफ़रत करते थे और ज़ुल्म भी करते थे। लोग सहाबा कराम से भी नफ़रत करते थे और मारते थे। सब सब्र के साथ बर्दाश्त करते थे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप भी सब्र से बर्दाश्त करें कि यह अहमदियत की शिक्षा है।

एक औरत ने निवेदन किया कि मेरे पति पहले नेक अहमदी थे। अब फ़ैमली के दबाव के अधीन अहमदियत से दूर हो रहे हैं। दुआ करें कि वह वापस आ जाऐं और मेरे बच्चे जमाअत से जुड़ें रहें। इस पर हुज़ूर अनवर फ़रमाया: अपने बच्चों को मस्जिद में नियमित लाएं। उनका मस्जिद से सम्बन्ध बना दें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मेरी रिपोर्ट है कि जिस तरह MTA देखा जाना चाहिए वैसे इंडोनेशिया में नहीं देखा जाता। अपने बच्चों को , अपनी नस्लों को MTA से जोड़ें। नई नसल के लिए प्रोग्राम इंडोनेशियन भाषा में बनाएँ। हुज़ूर अनवर ने वफ़द के मेंबरों से जायज़ा लिया कि कौन कौन ख़ुत्बा जुम्अ: सुनता है।

वफ़द के एक मैंबर ने सवाल किया कि जमाअत अहमदिया के द्वारा ग़लबा किस शक्ल में होगा। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया संख्या के लिहाज़ से भी होगा। संख्या बढ़ेगी और अधिकतर लोग अहमदियत में दाख़िल हो जाऐंगे। लोग ख़राब हालत में भी रहेंगे

एक दोस्त अब्दुल रहमान साहिब ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा कि मैं बहुत ख़ुश हूं कि यह सम्मान मिला कि जलसा में शामिल हो सकूं और हुज़ूर को पहली बार मिल सकूं। मैं कभी इस तजुर्बा को नहीं भूलूँगा।

एक साहिब ने निवेदन किया कि यह जलसा एक बेहतरीन जलसा था जिस का प्रबन्ध लगभग हर लिहाज़ से बहुत अच्छा था। हमें हुज़ूर अनवर से मिलने की तौफ़ीक़ मिली। विभिन्न देशों से आने वाले भाईयों से मिलने का अवसर मिला। इसी तरह ईमान वर्धक तक़रीर सुनने का अवसर मिला। जिससे हमारे ईमान में तरक़्क़ी नसीब हुई।

एक दोस्त फ़ज़ल अहमद साहिब वर्णन करते हैं मैं जलसा से बहुत आन्नदित हुआ। तक़ारीरों के विषयों का यक़ीनन मेरी ज़िन्दगी के साथ गहरा सम्बन्ध है कि मैं अपनी ज़िन्दगी को किस तरह गुज़ारूँ और यह मेरी ज़िन्दगी में रूहानियत पैदा करने के लिए अहम भूमिका अदा करती हैं। जलसा के दौरान मुझे अवसर मिला कि मैं अनुवाद के विभाग में सेवा कर सकूं।

वफ़द के मेंबरों ने निवेदन किया कि हमारी इच्छा है कि हुज़ूर अनवर इंडोनेशिया तशरीफ़ कब लाएंगे ,इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "ख़ुदा करे।' अल्लाह हाफ़िज़

इंडोनेशियन वफ़द की यह मुलाक़ात 11बजे तक जारी रही। आख़िर पर समस्त मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए समस्त छात्रों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

जॉर्जिया से मैंबर पार्लीमैंट Sergio Rathiani भी इस प्रोग्राम में शामिल थे। यह एक यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर भी हैं। जव्वाद अहमद बट साहिब मुरब्बी सिलसिला जॉर्जिया ने वर्णन किया कि महोदय हुज़ूर अनवर की ग़ैर अहमदी मेहमानों से तक़रीर के दौरान ख़ाकसार को बार-बार इशारा करके कह रहे थे कि क्या ही उम्दा तक़रीर है। कहते हैं कि हुज़ूर अनवर ने to the point बात की। उन्होंने बहुत ख़ुशी का इज़हार किया कि ऐसी तक़रीर बहुत कम सुनने में मिलती है। यही सियास्तदान हुज़ूर अनवर को मिलने के बाद बहुत ख़ुश थे और बार बार इक़रार कर रहे थे कि हुज़ूर अनवर को छोटे से देश जॉर्जिया के बारे में भी बहुत मालूमात हैं। कहते हैं कि इस्लाम का अर्थ ही अमन है और अमन फैलाना आपकी जमाअत का प्रमुख मक़सद है। बहुत ख़ुशी है कि जमाअत अमन के पैग़ाम को फैला रही है। जमाअत की इंति-ज़ामीया और मेहमान नवाज़ी बहुत उम्दा थी। किसी किस्म की कोई बदनज़्मी नहीं और हर चीज़ अपने निर्धारित समय पर हो रही है।

एक औरत ने निवेदन किया कि हमें ख़लीफ़तुल मसीह से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई है। इंतिज़ामीया ने जलसा को बहुत अच्छा आर्गेनाईज़ किया था। हर काम अपने वक़्त पर हो रहा था। बहुत प्रभावित करने वाला पैग़ाम था। इत्तिहाद तथा सलामती का पैग़ाम था। इसी की हमें ज़रूरत है। 40 हज़ार लोग थे लेकिन सब में मुकम्मल इत्तिहाद था। औरतें का अलग सैक्शन था। बहुत अच्छा आर्गेनाईज़ था। आज हमने सबको अपनी आँखों से देखा है। नौजवान नस्ल ने हमें बहुत प्रभावित किया है।

जॉर्जिया से दो औरतें Laura Gamkrelitdze और Lika साहिबा दूसरी बार जलसा में शामिल हुई हैं। समापन आयोजन से पहले उनकी तबीयत ख़राब हो गई और हस्पताल जाना पड़ा। बीमारी की हालत में जब पता चला कि सोमवार को जॉर्जिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात है तो कहने लगीं कि वह ज़रूर मुलाक़ात के लिए जाएँगी और फिर कमज़ोरी और बीमारी के बावजूद मुलाक़ात के लिए आईं।

ये कहती हैं कि जब वे पहली बार जलसा पर आईं तो बहुत हैरान हुईं और अब एक बार फिर शामिल होने के बाद यह यक़ीन हो गया है कि औरत को जो स्थान इस्लाम देता है वह अन्य धर्मों और पश्चिमी समाज से बहुत बुलंद है।

जॉर्जिया के वफ़द में धार्मिक उलूम की छात्रा Nanuka Zumbululidze भी शामिल थीं। बैअत के आयोजन के बारे में से यह अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहती हैं कि बैअत की आयोजन भावनाओं से भरपूर थी। मुझे मज़हबी इत्तिहाद का एक नज़ारा देखने को मिला और मालूम हुआ कि किस तरह विभिन्न रंग तथा नस्ल के लोग अमन के साथ इकट्ठे रह सकते हैं। मैं धार्मिक इल्म प्राप्त कर रही हूँ। जलसा पर पहली बार आई हूँ और मेरा यक़ीन है कि यह जलसा अमन को प्राप्त करने का एक बेहतरीन माध्यम है।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मैं पहली बार आया हूँ। कान्फ्रैंस में बहुत से लोगों से मिला हूं। सब ही बहुत ख़ुश थे। ख़लीफ़तुल मसीह ने बहुत अमन वाली बात की और अमन के पैग़ाम दिए। हमने जलसा में देखा कि लोग अपने ईमान में, रूहानियत में बढ़ रहे हैं। हर अहमदी अमन की स्थापना के लिए कोशिश करने वाला नज़र आया। महोदय ने आख़िर पर दुआ का निवेदन किया । हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपके तबसरा का शुक्रिया। जज़ाकल्लाह

एक मेहमान औरत ने निवेदन किया कि मैंने इस्लाम के बारे में बहुत लिखा है। मैंने "इस्लाम में औरत के स्थान" पर बहुत रिसर्च की है। और मैंने कई कान्फ्रैंसज़ attend की हैं। यहां के तीन दिन मेरे लिए बहुत प्रभावित करने वाले थे। हुज़ूर अनवर के ख़िताबों ने बहुत प्रभाव डाला है। औरतों की तरफ़ भी सब कुछ बहुत अच्छा था। मैंने बहुत से सवाल किए जिनके जवाब मुझे दिए गए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आप हमारा लिट्रेचर पढ़ें, यूके में एक प्रोफ़ैसर अपने आपको पर authentic समझता था। मैंने इस से पूछा कि क्या आपने इस्लामी शिक्षाएं पढ़ी हैं? क्या आपने "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी' पढ़ी है और इस तरह अन्य किताबें पढ़ी हैं? उसने जवाब दिया कि नहीं पढ़ें। इस पर मैंने उस को कहा कि आपको इस्लाम का पूरी तरह पता नहीं है। अत: कुछ समय बाद दोबारा मिला तो बताया कि मैंने इस्लाम के बारे में से काफ़ी पढ़ा है। अब मैं इस्लाम पर एक

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

chapter नहीं बल्कि पूरी किताब लिखूँगा और कादियान और रब्वा भी जाऊँगा। अत: उस ने Islam in British Empire के विषय से किताब लिखी।

हुज़ूर अनवर ने महोदया मेहमान औरत से फ़रमाया कि आप भी जमाअत के लिट्रेचर का मुकम्मल गहराई से अध्ययन करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारा काम मिशनरी वर्क है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि आख़िरी ज़माना में एक रीफ़ारमर, एक मुस्लेह मसीह और महदी के नाम के साथ आएगा और वह आने वाला मूसवी मसीह के क़दमों पर आएगा। अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार चौदहवीं सदी में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहि अस्सलाम कादियान में मबऊस हुए और इस्लामी शिक्षाओं का पुनर्जागरण किया और सारी दुनिया के सामने इस्लाम की वास्तविक और सच्ची शिक्षाएं पेश कीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम इस वक़्त सारी दुनिया में , जॉर्जिया में , यूरोप में , अफ़्रीक़ा , अमरीका, एशिया, ऑस्ट्रिया और जज़ाइर में इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं फैला रहे हैं। जो चाहे क़बूल करे जो चाहे न करे। हमारा पैग़ाम खुला है, ज़ाहिर है। अगर कोई क़बूल करे तो ठीक है अगर न भी करे तब भी हम बहैसीयत इन्सान उसको स्वागत कहेंगे। चाहे इसका कोई भी मज़हब हो।

पूर्वी उलूम के छात्र Giga Gigauri भी इस वफ़द में शामिल थे। यह कहते हैं लोग बहुत प्रशंसा कर रहे थे जिसकी कारण से मैं यहां हूँ। बैअत के आयोजन को में एक दर्शक के तौर पर देख रहा था। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं अपनी भावनाओं का इज़हार कर सकूं। लोगों का इस रंग में इकट्ठा होना एक शानदार बात है।

एक लोक कल्याण से सम्बंधित वकील Mary भी जलसा में शामिल हुईं। उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा कि इस जलसा का उद्देश्य अमन की स्थापना और एक दूसरे के साथ रवादारी और भाईचारा के साथ रहना है। इसी कारण से यह जमाअत आगे बढ़ रही है। यह वे चीज़ें हैं जो अन्य जमाअतों में देखने को नहीं मिलतीं। नज़र आता है कि यह जमाअत सख़्त मेहनत कर रही है और सफलता प्राप्त कर रही है।

जॉर्जिया से एक ग़ैर मुस्लिम मेहमान ने निवेदन किया मुझे जलसा पर बहुत से लोगों के साथ बात करने का अवसर मिला। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि मेरे बहुत से नए दोस्त बने हैं।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मैं जॉर्जिया में मुस्लिम कम्यूनिटी का मैंबर हूँ और वहां इमाम भी हूँ। यहां का हर प्रबन्ध बहुत अच्छा था। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यहां कोई पुलिस न थी। लोग समझते हैं कि मुसलमान जब बड़ी संख्या में जमा हों तो अनुशालन वाले हो कर इकट्ठे नहीं बैठ सकते लेकिन यहां चालीस हज़ार लोग बड़े अनुशासन वाले तरीक़े से बैठे थे

महोदय ने निवेदन किया कि जलसा के प्रबन्ध का बहुत उच्च स्तर का था। बड़ा अच्छा प्रबन्ध था। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारा मिशन यह है कि सब एक भाई की तरह रहीं। अमन तथा सलामती हो और इस के लिए हम कोशिश कर रहे हैं। अहमदिया कम्यूनिटी इस पर काम कर रही है।

एक और औरत वकील Salome भी जॉर्जिया के वफ़द में शामिल थीं। उन्होंने निवेदन किया मुझे ख़ुशी है कि इस आयोजन में विभिन्न देशों से मुक़र्ररीन शामिल हुए और मुझे ख़ुशी है कि एक मुक़र्रर जॉर्जिया के सियास्तदान थे जिससे जॉर्जिया का प्रतिनिधित्व हुआ।

एक औरत ने कहा: मैं और मेरे कुछ साथी ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहि-महुल्लाह की किताब Islam's Response to Contemporary Issues का जार्जियन ज़बान में अनुवाद करेंगे और इस के बाद एक कान्फ्रैंस नि-र्धारित करके इस किताब का परिचय करवाएंगे और जमाअत अहमदिया के अक़ीदों और शिक्षाओं पर विचार विमर्श करवाएंगे।

एक औरत Nana Kurdiani साहिबा ने निवेदन किया मैं न तो मुसलमान हूँ और न ही ईसाई हूँ लेकिन इस जलसा पर आने के बाद में अपने आपको इस्लाम की तरफ़ झुका हुआ देखती हूँ। मैं यह सोचने पर मजबूर हूँ कि मैं अपने मज़हब के बारे में कुछ करूँ।

एक और औरत ने हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बारे में निवेदन किया:मैं इस बात पर यक़ीन रखती हूँ कि हुज़ूर अनवर निहायत ज़हीन और व्यापक नज़र वाले इन्सान हैं। आप दूर-अँदेश हैं और उसके अनुसार आप तय्यारी करते हैं।

एक फ़लाही इदारे के चेयरमैन Besso साहिब ने वर्णन किया: बहुत से अहमदी लोगों से बात करने का अवसर मिला और मैंने इस बातचीत में यह जायज़ा लेने की कोशिश की कि यह जमाअत किस क़दर मज़हबी रवादारी का ख़्याल रखने वाली है। इस उद्देश्य से दो अहमदियों से बातचीत के दौरान मैंने उन्हें अचानक बताया कि मैं मुसलमान नहीं हूँ बल्कि ईसाई हूँ। मेरा ख़्याल था कि यह जान कर उन लोगों का रवैया बदल जाएगा। लेकिन में बहुत हैरान हुआ कि अहमदी दोस्त जिस तरह पहले अच्छे आचरण से बात कर रहे थे इसी तरह अपने आचरण का इज़हार करते रहे और किसी किस्म के द्वेष का इज़हार नहीं किया।

पिछले साल जॉर्जिया की यूनिवर्सिटी के पाँच छात्रों छात्राएं जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए थे। इस साल भी ये लोग जलसा में शामिल थे। उन्होंने वर्णन किया हमें ऐसा लगा जैसे हम दोबारा अपनी फ़ैमिली के पास वापस आ गए हैं। पिछले साल जलसा सालाना पर जब ये छात्र पधारे थे तो हर एक ने अपने लिए एक विषय निर्धारित किया था जिस पर जलसा सालाना जर्मनी के दौरान उन्होंने तहक़ीक़ करनी थी। जैसे इस्लाम में औरत के अधिकार इत्यादि। जलसा से वापस जाने के बाद उन्होंने इस्लाम से बारे में इन विषयों पर मुरब्बी साहिब की मौजूदगी में यूनिवर्सिटी में एक तफ़सीली प्रोग्राम आयोजित किया।

जॉर्जिया से आने वाले एक मेहमान ने निवेदन किया कि मैं ईरान से हूँ। मेरी बैकग्रांऊड शीया है। कान्फ्रेंस में ख़लीफ़तुल मसीह ने जो भी फ़रमाया है मैं हर बात से सहमति करता हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :क़ुरआन करीम कहता है कि ला इकराहा फिद्दीन कि मज़हब में कोई जबर है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मुसलमान शान्ति प्रिय हैं और हम सब पर इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम फैलाना फ़र्ज़ है। क़ुरआन करीम ने सब धर्मों को एक ही बात पर इकट्ठा होने का पैग़ाम दिया है। अर्थात ऐसी बातों पर इकट्ठे हो जाओ जो सब में साझी है और वह ख़ुदा तआला की हस्ती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम में 73 फ़िर्क़े हैं। यहूदियत में भी फ़िर्क़े हैं। शीया लोग हैं , उनके आगे अपने कई फ़िर्क़े हैं तो इस तरह धर्मों आगे बट्टे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आस्ट्रेलिया में एक जगह एक मीटिंग थी। वहां ईसाई चर्च के लोगों से इस्लाम के फ़िर्क़ों के बारे में बात हुई तो एक दोस्त कहने लगे कि हम तीन विभिन्न चर्चिज़ के लोग यहां बैठे हैं। यहां हम एक हैं लेकिन बाहर जाकर हम अलग-अलग होंगे

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर आप इन्सानी इक़दार को समझेंगे और एक दूसरे की क़दरों को समझेंगे तो तब ख़ुदा तआला को भी पहचानेंगे। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि मैं हुज़ूर अनवर की इस बात से सहमति करता हूँ।

जॉर्जिया के एक ग़ैर मुस्लिम मेहमान ने इस बात का इज़हार किया कि वह एशीयन लोगों और विशेषत: मुसलमानों से ख़ौफ़ रखते थे ओर यह उम्मीद नहीं रखते थे कि यहां लोग इस क़दर अमन वाले और मेहमान नवाज़ होंगे। यह कहते हैं कि भीड़ में भी लोगों को एक दूसरे को धकेलते हुए या एक दूसरे पर चिल्लाते हुए नहीं देखा। इन्ही आचरण की बदौलत आपकी जमाअत इस क़दर मज़बूत है।

जॉर्जिया से यूनिवर्सिटी का एक छात्र Georgio Rashwadze भी जलसा में शामिल हुआ। यह एक इमाम का भतीजा है, जो कि पिछले साल जलसा

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

में शामिल हुए थे। इन इमाम साहिब ने जलसा से वापस जाकर जलसा पर जाने की नसीहत की। यह छात्र कहते हैं कि मैं नाम का मुसलमान हूँ लेकिन अब जलसा पर शामिल हो कर इमाम जमाअत अहमदिया की मुहब्बत को देखकर मैं जमाअत अहमदिया के बारे में और अधिक अध्ययन करूँगा।

जलसा पर उनका मोबाइल गुम हो गया था। जब फ़ोन किया तो किसी अहमदी ने उठाया और फिर इस तरह मोबाइल वापस मिल गया। जिसका उन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा कि वह इस जमाअत में हर तरह सुरक्षित हैं।

जॉर्जिया से एक वकील और यूनिवर्सिटी लैक्चरार Temor Shengelaya पहली बार जलसा में शामिल हुई और बहुत प्रभावित हुए। बैअत के आयोजन के बाद बार-बार कहते रहे कि यह एक मोजिज़ा है, यह एक मोजिज़ा है। कहने लगे कि जमाअत में आपसी मुहब्बत बहुत अधिक है। विशेष रूप से मैंने देखा है कि आप लोगों के चेहरों पर हमेशा मुस्कुराहट रहती है।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मैं भी जॉर्जिया में एक मस्जिद का इमाम हूँ। जॉर्जिया में बहुत सी कौमें आबाद हैं। मेरा सम्बन्ध आज़र बाईजान से है। हमारा जो इस्लाम है वह बाक़ियों से विभिन्न है। इस्लाम अमन तथा सलामती का धर्म है। आजकल मुसलमानों के जो हालात हैं वह इस बात को ज़ाहिर करते हैं कि अहमदियों का जो दृष्टिकोण है उसको अपनाया जाए। आजकल radicalism और extremism बढ़ गया है। इन हालात में अहमदी जो कान्फ्रैंसज़ आयोजित करते हैं उनकी ज़रूरत दुनिया में और अधिक बढ़ गई है। हमने ख़लीफ़तुल मसीह की समस्त तक़रीरें सुनी हैं। हमने महसूस किया है कि जो ख़लीफ़तुल मसीह ने वर्णन किया है वह सारी दुनिया को बताने की ज़रूरत है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम सिर्फ एक उस इस्लाम को जानते हैं जो ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन करीम की सूरत में उतारा। हम इस इस्लाम को जानते हैं आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और अहादीस और रवायतों से साबित है। हमारे निकट तो असल और वास्तविक इस्लाम यही है। इसके इलावा कोई दूसरा इस्लाम नहीं। बाक़ी हनफ़ी, मालकी, शाफ़ई, हनबली फ़िरक़े बने हुए हैं। हक़ीक़त में इस्लाम यह है कि एक ख़ुदा, एक नबी और एक क़ुरआन को मानना और इस की शिक्षा पर अनुकरण करना है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने कामिल शरीयत के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा और आप पर यह शरीयत पूर्ण हुई। बाद में एक अन्धेरे युग में बिगाड़ पैदा हुआ। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार आप की ग़ुलामी में इस आख़िरी ज़माना में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा ताकि आप इस्लाम की शिक्षा का पुनर्जागरण करें और दुनिया को बताएं कि ख़ुदा तआला के अधिकार किस तरह अदा करने हैं। अत: आप ने दुनिया को इस्लाम की असल और वास्तविक शिक्षा से परिचित किया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमारी दुआ है कि अल्लाह करे कि दुनिया अपने पैदा करने वाले को पहचान ले और लोग एक दूसरे के अधिकार अदा करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैंने सुना है कि जॉर्जिया में फ़िर्क़े शीया , सुनी इत्यादि बड़े आराम से अमन से रहते हैं। हमारे लिए यह ख़ुशी की बात है कि जॉर्जिया में फ़िर्क़े अमन से रहते हैं।

एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम किसी से दुश्मनी , नफ़रत नहीं रखते। हमारी हर चीज़ खुली है। मुहब्बत सबसे नफ़रत किसी से नहीं। हम सबसे मुहब्बत रखते हैं। किसी से इंतिक़ाम नहीं लेना, किसी का बुरा नहीं चाहना, किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचाना। अगर यह होगा तो फिर समाज में अमन होगा और सब अमन से रहेंगे। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर अनुकरण करेंगे। यह सिर्फ़ समझने वाली बात है। अगर आप अमन से रहना चाहते हैं तो रह सकते हैं जैसे जॉर्जिया में रह रहे हैं।

जॉर्जिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात12 बजकर 5 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तसवीरें बनवाने का सौभाग्य पाया

अल्बानियन वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार (Albania) अल्बानिया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

अल्बानिया से 26 मर्दों पर आधारित वफ़द बस के द्वारा 2 हज़ार किलोमीटर का सफ़र तय करके जलसा में शामिल हुआ। इस वफ़द में 14 मर्द और 12 औरतें थीं जिनमें आठ अहमदी लोगों और बाक़ी तब्लीग़ की जा रही थीं। उन में से दो लोग जलसा के आख़िरी दिन बैअत करके जमाअत में शामिल हुए। सबसे पहले समस्त मेहमानों ने अपना परिचय करवाया।

एक मुबाइयात Pellumb Beja (पल्लुमब बेजा) साहिब से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि आपके बैअत करने का क्या कारण बना? इस पर महोदय ने निवेदन किया कि मैंने हुज़ूर के हाथ पर बैअत की और जमाअत में दाख़िल होने का सौभाग्य पाया और इस के लिए मैं अल्लाह तआला का बेहद शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे अहमदियत में आने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है। मेरी बैअत का कारण यह बना कि शक से यक़ीन की तरफ़ और अंधेरे से नूर की तरफ़ सफ़र करने से अहमदी हुआ हूँ। मैं अल्लाह तआला का बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। एक साल पहले मैं ईमान से ख़ाली था। इस साल अल्लाह तआला ने मुझे ईमान की दौलत नसीब फ़रमाई है। मेरी पैदाइश और परवरिश मुकम्मल लामज़हब माहौल में हुई। लेकिन अल्लाह तआला ने जलसा सालाना में शामिल होने और हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के द्वारा मुझे ईमान से लाभान्वित किया।

एक मेहमान (Besim Gjozi) बेसिम जोज़ी साहिब ने निवेदन किया : मैं एक दिन पहले अर्थात जलसा के आख़री दिन ही बैअत करके जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में शामिल हुआ हूँ और इस के लिए मैं अल्लाह तआला का बहुत शुक्र-गुज़ार हूँ। पहले मैं व्यावहारिक तौर पर मुसलमान न था। कल मैंने ख़ुदा तआला से अह्द किया कि इस्लाम के समस्त आदेशों की पाबंदी अपने ऊपर लाज़िम करूँगा। ख़ुदा का शुक्र है कि मैं जमाअत अहमदिया का मैंबर बन गया हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला मज़बूती फ़रमाए। आमीन

एक मेहमान (Sinan Breshanaj) सिनअन बड़े शानाए साहिब ने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा मेरे जमाअत में शामिल होने का कारण कुछ साल पहले हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात थी। जिसके बाद मैं हर साल जर्मनी के जलसा में शामिल होता हूँ। मैंने कुछ साल पहले हुज़ूर से अपने नवासों के लिए दुआ की दरख़ास्त की थी और घर वापस पहुंचने से पहले ही अल्लाह तआला ने मेरे नवासों की स्कॉलरशिप के सामान फ़रमाए। यह मेरे ईमान में वृद्धि का कारण बना।

एक अहमदी दोस्त (Bekim Bici) बेकम बेतसी साहिब ने वर्णन किया मैंने 2004 ई में बैअत की। जर्नलिज़म में ग्रेजवाएशन में उच्च कामयाबी प्राप्त की और इस बिना पर 2016 ई के जलसा सालाना पर हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ से मैडल प्राप्त करने का भी सौभाग्य पाया। इसके बाद मैंने अल्बानिया में कुछ ऑनलाइन अख़बारों में पत्रकार के तौर पर काम किया। पिछले साल जलसा सालाना जर्मनी पर आने के लिए जब मैंने छुट्टी की दरख़ास्त दी तो मन्ज़ूर नहीं हुई। इस पर मैंने काम से इस्तीफ़ा दे दिया क्योंकि मैं इस जलसा सालाना से गैरहाज़िर नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने उसी दिन मेरे लिए दूसरी मीडिया कंपनी में काम दिला दिया जहां पर यह शर्त भी मंज़ूर कर ली गई कि मैं इस साल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 2 April 2020 Issue No 14

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हो कर वापस आने के बाद काम शुरू कर सकता हूँ। इसी तरह इस साल भी सिर्फ 4 माह हुए थे कि एक ऑनलाइन अख़बार में काम कर रहा था , कंपनी के क़ानून के अनुसार पहले 6 माह में छुट्टी नहीं ले सकता था। फिर भी मैंने जलसा के लिए छुट्टी की दरख़ास्त दी जो मंज़ूर नहीं हुई। मैंने काम से अस्तीफ़ा दे दिया और इसी दिन मुझे तीन और कंपनियों की तरफ़ से काम का ऑफ़र मिला। अत: मैंने एक जगह पर इस शर्त के साथ क़बूल किया कि मैं जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हो कर वापस आने के बाद काम शुरू करूँगा। अब मैंने 16 जुलाई से नए काम पर जाना है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।"

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मेरी माता बीमार हैं उनकी सेहत के लिए दुआ का निवेदन है। उन्होंने भी बैअत की हुई है। पिता साहिब भी बीमार हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।"

फिर शादियों के बारे में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि लड़कों की शादियां हो जाती हैं, लड़कियों की अधिक फ़िक्र होती है

एक मेहमान ने निवेदन किया कि कुछ नौजवान हमारे ज़ेरे तब्लीग़ हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि दुआ करते रहें। कोशिश करते रहीं। इंशा अल्लाह क़रीब आ जाऐंगे।

एक मेहमान ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ की दरख़ास्त की कि हमारे दोस्त जमाअत के लोगों फ़आल हो जाएं। अक्तूबर में हमारा जलसा सालाना है। इस के लिए दुआ की दरख़ास्त है। हमारे जलसा पर 350 के क़रीब लोग आते हैं

एक दोस्त ने अपने भाई के लिए दुआ की दरख़ास्त की कि इस का दिमाग़ी सन्तुलन ठीक नहीं रहता। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।"

एक अहमदी दोस्त Gzim Muzhaqi (गज़ीम मुझकी) साहिब जिनका सम्बन्ध लामज़हब सोसाइटी से था उनका कुछ साल पहले जमाअत से सम्पर्क हुआ। मज़हब और विशेषत: इस्लाम से बारे में जो दलीलें जमाअत अहमदिया देती है वह उन्हें बहुत माक़ूल लगी और पसन्द आए। इस से पहले मौलवियों की कहानियों की कारण से उनका दिल मज़हब से बेज़ार था। अत: कुछ साल पहले उन्होंने बैअत की और अब धीरे-धीरे इस्लामी आचरण की पाबंदी कर रहे हैं। महोदय ने निवेदन किया: इस बार जलसा सालाना मुझे बहुत ख़ास लगा। प्रबन्ध और मेहमान नवाज़ी हर साल की तरह निहायत ही उच्च थे। हुज़ूर अनवर का लजना से ख़िताब और समापन ख़िताब बहुत अच्छा लगा। औरतों से ख़िताब फ़रमाते हुए जो पैग़ाम हुज़ूर अनवर ने मर्दों को दिया वह भी बहुत अच्छा था।

एक मेहमान औरत (Blertina Koka) बलेड़तीना कूका साहिबा ने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हूँ। मैंने अलबानीयन ज़बान में मास्टर्ज़ किया है और जमाअत की अलबानीयन website के लिए हुज़ूर अनवर के ख़िताबों के कुछ हिस्से और प्रैस रीलीज़ का अनुवाद भी किया है। अब तक मेरा हुज़ूर से केवल ग़ायबाना परिचय था और हुज़ूर की अमन से बारे में कोशिशें और पैग़ामात पढ़ कर प्रभावित हुई थी। लेकिन आपसे मुलाक़ात के बाद आपकी सादगी और मिलनसारी से बेहद प्रभावित हुई हूँ और वास्तव में आपकी शख़्सियत की क़दर आप के बारे में जो मेरा ख़्याल था इस से कहीं अधिक है। मैं आपकी बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।

एक और अहमदी औरत Xhensila Kadriu (जेंसीला कादरीओ) साहिबा ने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा कि मैं भी जलसा में पहली बार आई हूँ। मेरे पिता साहिब हर साल जलसा पर आते हैं, लेकिन इस बार सेहत की ख़राबी की कारण से नहीं आ सके। अलबानीयन क़ौम मेहमान-नवाज़ी के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन यहां आकर पता चला कि मेहमान नवाज़ी के इस से उच्च स्तर भी हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपने अल्बानिया से जर्मनी का मुक़ाबला करा दिया है। अब तो जर्मनी वालों को और भी अच्छा स्तर करना पड़ेगा।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मुझे यहां जलसा पर छ: बार आने का अवसर मिला है। मैं पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की कारण से अहमदी बना था। ख़ुदा तआला हुज़ूर अनवर का मददगार हो। मेरे लिए दुआ करें। मैं बूढ़ा हूँ। पता नहीं अगले साल रहूं या ना रहूं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आप बूढ़े नहीं लगते। ख़ुदा तआला आपको सेहत दे, दे।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि अल्बानिया में मुरब्बी अकेला है। काम बहुत अधिक है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आप जमाअत बनाएँ, जमाअत की संख्या बढ़ाएं। अब ये आप लोगों के लिए काम है।

एक मेहमान एलेड़ चूओलानजी (ILIR CYLANDJI) साहिब जोकि अल्बानियन हैं लेकिन जर्मनी में निवासी हैं उन्होंने वर्णन किया जलसा सालाना हर अहमदी मुसलमान के लिए एक महान रुहानी इज्तिमा है, जिसमें जमाअत के लोगों इलावा अन्य धर्मों और क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों की भी एक बड़ी संख्या शामिल होती है। जलसा सालाना में शामिल हो कर उन्हें जहां इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं से परिचय प्राप्त होता है, वहीं जमाअत अहमदिया में निज़ाम ख़िलाफ़त की स्थापना के द्वारा इन ख़ूबसूरत शिक्षाओं का व्यवहारात्मक नमूना देखने का भी तजुर्बा होता है। इन तीन दिनों के दौरान मर्दों और औरतें के जलसा गाह में विभिन्न इज्लासों का आयोजन होता है जिसमें मौजूदा ज़माना के तग़य्युरात और चैलेंजिज़ के मुकाबला में इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षाओं को पेश किया जाता है।

मैं बहैसीयत एक अहमदी मुसलमान सारा साल इस रुहानी जलसा का बड़े एह-तिमाम से इंतज़ार करता हूँ क्योंकि यहां एक वास्तविक भाईचारा की रूह नज़र आती है, जिसे वर्णन करना नामुमकिन है। इस ख़ालिस और फ़ित्री मुहब्बत का इज़हार समस्त अराकीन जमाअत की तरफ़ से होता है। इस जलसा में आकर मुझे यूं महसूस होता है कि मानो मैं जन्नत में हूँ और दुनिया का सबसे ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ। जलसा ख़त्म होने के साथ ही अगले जलसा का बेसबरी से इंतज़ार होता है।अल्लाह तआला इस जमाअत को अपने बेशुमार फ़ज़लों से नवाज़ता जाए।

जर्मनी में निवासी एक और अल्बानियन दोस्त सिकन्दर मुफ़्तारी (Sknder Myftari साहिब ने वर्णन किया: जलसा सालाना मेरे लिए ग़ैरमामूली ख़ुशी और आन्नद का सामान लेकर आता है क्योंकि इस में हमें प्यारे हुज़ूर से मुलाक़ात का मौक़ा मिलता है, इसी तरह आपके पीछे नमाज़ें पढ़ने और आपके ख़ुत्बा सुनने का मौक़ा मिलता है। इसी तरह दूसरे देशों से तशरीफ़ लाने वाले अहमदी भाईयों से मुलाक़ात होती है।

अल्बानिया के एक दोस्त हायरी तुरबीतारी साहिब (Hairi Turbetari) ने निवेदन किया कि मुझे इस बात की इंतिहाई प्रशंसा और ख़ुशी है कि मैं इस जमाअत का हिस्सा हूँ। मुझे बैअत किए हुए लगभग पाँच साल हो चुके हैं, और हर साल जलसा पर आने से ज़रूर बहुत कुछ नया सीखने को मिलता है। मुझे इस बात पर फ़ख़र है कि मैं जमाअत अहमदिया का हिस्सा हूँ। मेरी यही दुआ है कि अल्लाह तआला अधिक से अधिक लोगों को इस बरकत वाली जमाअत का हिस्सा बनें आमीन।

एक अहमदी दोस्त ने निवेदन किया कि यह मेरे लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है कि मैंने अहमदियत क़बूल की है। कई बार मुझे ख़्याल आता है कि इस्लाम के लिए बड़ा आदमी बनो। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि तब्लीग़ करते रहें। पांचों वक़्त की नमाज़ें पढ़ें, आप बड़े आदमी बन जाऐंगे।

अल्बानियन वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 12 बज कर 30 मिनट पर ख़त्म हुई। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

(शेष.....)

☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad